

परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार

यह समाधान है!

क्या आपको इस बात का एहसास है कि यीशु ने कहा था कि जब तक परमेश्वर के राज्य का प्रचार दुनिया के सामने एक गवाह के रूप में नहीं किया जाता, तब तक अंत नहीं आ सकता?



“भेड़िया और मेमने के साथ रहेगा... वे मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो हानि पहुँच जाएँगे और न ही विनाश करेंगे, क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से भर जाएगी, जैसे जल समुद्र को ढक लेता है।” (यशायाह 11:6,9)

द्वारा

Bob Thiel, Ph.D.

परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार

यह समाधान है!

Bob Thiel, Ph.D.

कॉपीराइट ©2016/2017/2018/2019/2022/2025/2026 द्वारा Nazarene Books संस्करण 3.0. पुस्तिका का निर्माण इसके लिए किया गया है। कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड (Continuing Church of God) और उत्तराधिकारी, एक एकल निगम। P.O. Box 109, Grover Beach, California, 93483, U.S.A. ISBN: 978-1-63660-113-7.

मानव जाति अपनी समस्याओं का समाधान क्यों नहीं कर सकती?

क्या आप जानते हैं कि बाइबल के अनुसार यीशु ने जो पहली और आखिरी बातों का प्रचार किया, वे परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार से संबंधित थीं?

क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर का राज्य प्रेरितों और उनके अनुयायियों के लिए सर्वोपरि लक्ष्य था?

क्या परमेश्वर का राज्य यीशु ही है? क्या परमेश्वर का राज्य यीशु ही है जो अब हमारे भीतर अपना जीवन जी रहा है? क्या परमेश्वर का राज्य भविष्य में आने वाला कोई वास्तविक राज्य है? क्या आप बाइबल की शिक्षाओं पर विश्वास करेंगे?

राज्य क्या है? परमेश्वर का राज्य वास्तव में क्या है? बाइबल क्या सिखाती है? प्रारंभिक ईसाई चर्च क्या सिखाता था?

क्या आपको इस बात का एहसास है कि जब तक परमेश्वर के राज्य का प्रचार दुनिया के सामने एक गवाह के रूप में नहीं किया जाता, तब तक अंत नहीं आ सकता?

"कवर पृष्ठ पर दिखाए गए चित्र में एक मेमना लेटा हुआ है, जिसके पास एक भेड़िया है, जैसा कि Burdine Printing and Graphics द्वारा तैयार किया गया है। पिछले कवर पर दिखाया गया चित्र 2013 में Dr. Bob Thiel द्वारा लिया गया यरुशलम में स्थित चर्च ऑफ गॉड की मूल इमारत का एक हिस्सा है।

अंतर्वस्तु

1. क्या मानवता के पास समाधान हैं? पृष्ठ 2
2. यीशु ने किस सुसमाचार का प्रचार किया? पृष्ठ 9
3. क्या पुराने नियम में परमेश्वर के राज्य का उल्लेख मिलता था? पृष्ठ 21
4. क्या प्रेरितों ने भगवान के राज्य के सुसमाचार की शिक्षा दी? पृष्ठ 27
5. नए नियम के बाहर के स्रोतों ने सिखाया परमेश्वर का राज्य। पृष्ठ 37
6. ग्रीको-रोमन चर्च सिखाते हैं कि ईश्वर का राज्य महत्वपूर्ण है, लेकिन... पृष्ठ 58
7. परमेश्वर का राज्य क्यों? पृष्ठ 66
- संपर्क जानकारी पृष्ठ 74

नोट: यह पुस्तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा अंग्रेजी संस्करण का अनुवाद है, इसलिये कुछ अभिव्यक्तियाँ पूरी तरह से मूल के अनुरूप नहीं हो सकतीं, लेकिन उम्मीद है कि वे करीब होंगी। अंग्रेजी संस्करण www.ccog.org पर मुफ्त में ऑनलाइन उपलब्ध है।

1. क्या मानवता के पास समाधान हैं?

दुनिया कई समस्याओं का सामना कर रही है।

बहुत से लोग भूखे हैं। बहुत से लोग दमन का शिकार हैं। बहुत से लोग गरीबी से जूझ रहे हैं। कई देश गंभीर कर्ज में डूबे हुए हैं। अजन्मे बच्चों समेत सभी बच्चे दुर्घटन का शिकार हैं। दवा प्रतिरोधी बीमारियों को लेकर कई डॉक्टर चिंतित हैं। प्रमुख औद्योगिक शहरों की हवा कितनी प्रदूषित है कि वह स्वास्थ्यकर नहीं रह सकती। विभिन्न राजनीतिक युद्ध की धमकी दे रहे हैं। आतंकवादी हमले लगातार हो रहे हैं।

क्या विश्व नेता मानवता के सामने मौजूद समस्याओं का समाधान कर सकते हैं?

बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं।

नया सार्वभौमिक एजेंडा

25 सितंबर, 2015 को, वेटिकन के पोप फ्रांसिस के मुख्य भाषण के बाद, संयुक्त राष्ट्र (UN) के 193 देशों ने "17 सतत विकास लक्ष्यों" को लागू करने के लिए मतदान किया, जिसे कभी-कभी "सतत विकास लक्ष्य" भी कहा जाता है। नया सार्वभौमिक एजेंडा है संयुक्त राष्ट्र के 17 लक्ष्य:

लक्ष्य 1. हर जगह गरीबी के सभी रूपों को समाप्त करना।

लक्ष्य 2. भूख को समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण प्राप्त करना और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना।

लक्ष्य 3. सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और कल्याण को बढ़ावा देना।

लक्ष्य 4. सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना।

लक्ष्य 5. लैंगिक समानता प्राप्त करना और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना।

लक्ष्य 6. सभी के लिए जल और स्वच्छता की उपलब्धता और सतत प्रबंधन सुनिश्चित करना।

लक्ष्य 7. सभी के लिए कृषियुक्त, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

लक्ष्य 8. सतत, समावेशी और टिकाऊ आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोजगार और सभी के लिए सम्मानजनक काम को बढ़ावा देना।

लक्ष्य 9. लचीला बुनियादी ढांचा तैयार करना, समावेशी और टिकाऊ औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देना और नवाचार को प्रोत्साहित करना।

लक्ष्य 10. देशों के भीतर और देशों के बीच असमानता को कम करना

लक्ष्य 11. शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लचीला और टिकाऊ बनाना।

लक्ष्य 12. सतत उपभोग और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करना

लक्ष्य 13. जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करें।

लक्ष्य 14. सतत विकास के लिए महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और सतत उपयोग करना।

लक्ष्य 15. स्थलीय पारिस्थितिक तंत्रों की रक्षा, पुनर्स्थापना और सतत उपयोग को बढ़ावा देना, वनों का सतत प्रबंधन करना, मरुस्थलीकरण से

लड़ना, भूमि क्षरण को रोकना और उसे उलटना तथा जैव विविधता के नुकसान को रोकना।

लक्ष्य 16. सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समाजों को बढ़ावा देना, सभी के लिए न्याय तक पहुंच सुनिश्चित करना और सभी स्तरों पर प्रभावी, जवाबदेह और समावेशी संस्थानों का निर्माण करना।

लक्ष्य 17. कार्यान्वयन के साधनों को सुदृढ़ करना और सतत विकास के लिए वैश्विक साझेदारी को पुनर्जीवित करना।

इस एजेंडा को 2030 तक पूरी तरह से लागू किया जाना है और इसे सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा भी कहा जाता है। इसका उद्देश्य नियमन, शिक्षा, और अंतरराष्ट्रीय एवं अंतरधार्मिक सहयोग के माध्यम से मानवता के सामने आने वाली समस्याओं को हल करना है। इसके कई उद्देश्य अच्छे हैं, लेकिन इसके कुछ तरीके और लक्ष्य बुरे हैं (उदा. उत्पत्ति 3:5)। यह एजेंडा, इसके अलावा, दिवंगत पोप फ्रांसिस की *Laudato Si* encyclical के अनुरूप भी था। पोप लियो XIV ने भी इस 2030 एजेंडा के समर्थन में बयान दिए थे।

नया सार्वभौमिक एजेंडा” को “नया कैथोलिक एजेंडा” भी कहा जा सकता है क्योंकि “कैथोलिक” शब्द का अर्थ “सार्वभौमिक” होता है। पोप फ्रांसिस ने इस एजेंडा को अपनाने को “आशा का एक महत्वपूर्ण संकेत” कहा।

संयुक्त राष्ट्र समझौते के अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में, दिसंबर 2015 में पेरिस में एक बैठक हुई (आधिकारिक तौर पर शीर्षक दिया गया) 21 जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन के पक्षकारों का सम्मेलन पोप फ्रांसिस ने भी उस अंतरराष्ट्रीय समझौते की प्रशंसा की और देशों को सलाह दी कि वे "आगे के मार्ग का सावधानीपूर्वक अनुसरण करें, और एकजुटता की भावना को लगातार बढ़ाते रहें।"

विश्व के लगभग सभी देशों ने पेरिस समझौते पर सहमति जताई थी, जिसमें विशिष्ट पर्यावरण लक्ष्य और वित्तीय प्रतिबद्धताएं शामिल थीं। (तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 2016 में इस समझौते के लिए अमेरिका को प्रतिबद्ध करने वाले दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन 2017 में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने घोषणा की कि संयुक्त राज्य अमेरिका सहमत पेरिस समझौते को स्वीकार नहीं करेगा और इससे बाहर निकल गया। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आक्रोश फैल गया और अमेरिका यूरोप और दुनिया के कई अन्य हिस्सों से अलग-थलग पड़ गया।) पोप फ्रांसिस ने कहा कि यदि मानवता जलवायु से संबंधित उनके बताए गए बदलाव नहीं करती है तो उसका पतन हो जाएगा।

हालांकि कोई भी प्रदूषित हवा में सांस लेना, भूखा रहना, गरीब होना, लुप्तप्राय होना आदि नहीं चाहता, क्या संयुक्त राष्ट्र के 2030 एजेंडा और/या पेरिस समझौते के लक्ष्यों को प्राप्त करने के मानवीय प्रयास मानवता के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान करेंगे?

संयुक्त राष्ट्र का वर्तमान इतिहास

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, भविष्य में ऐसे किसी संघर्ष को रोकने और विश्व में शांति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, संयुक्त राष्ट्र का गठन और स्थापना 24 अक्टूबर 1945 को हुई थी। स्थापना के समय, संयुक्त राष्ट्र में 51 सदस्य देश थे; अब इनकी संख्या 193 है।

संयुक्त राष्ट्र के गठन के बाद से दुनिया भर में सैकड़ों, बल्कि हजारों संघर्ष हुए हैं, लेकिन अभी तक हमने ऐसा कुछ नहीं देखा है जिसे तीसरा विश्व युद्ध कहा जा सके।

कुछ लोगों का मानना है कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा बढ़ावा देने का दावा किए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय सहयोग के साथ-साथ पोप लियो XIV और कई अन्य धार्मिक नेताओं द्वारा बढ़ावा दिए जा रहे अंतरधार्मिक और सर्वधर्म समन्वय के एजेंडे से शांति और समृद्धि आएगी।

हालांकि, संयुक्त राष्ट्र का इस दिशा में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। संयुक्त राष्ट्र के गठन के बाद से हुए अनगिनत सशस्त्र संघर्षों के अलावा, करोड़ों लोग भूख, शरणार्थी और/या अत्यधिक गरीबी से ग्रस्त हैं।

दशकों पहले, संयुक्त राष्ट्र ने अपने सहस्राब्दी विकास लक्ष्य इसमें आठ "विकास लक्ष्य" निर्धारित थे, लेकिन संयुक्त राष्ट्र के अनुसार भी यह सफल नहीं हुआ। इसलिए, 2015 में उनके तथाकथित "17 सतत विकास लक्ष्य" अपनाए गए। कुछ लोग आशावादी हैं, जबकि कुछ इसे एक काल्पनिक सपना मानते हैं।

आदर्श समाज की बात करें तो, 6 मई 2016 को तत्कालीन पोप फ्रांसिस ने कहा था कि वे एक मानवीय यूरोपीय आदर्श समाज का सपना देखते हैं, जिसे हासिल करने में उनका चर्च मदद कर सकता है। लेकिन, पोप का यह सपना एक दुःस्वप्न में तब्दील हो जाएगा (देखें प्रकाशितवाक्य 18)।

कुछ हद तक सहयोग और सफलता मिल सकती है, लेकिन...

मेरियम वेबस्टर का शब्दकोश बाइबल कहती है कि आदर्शलोक एक "काल्पनिक स्थान है जहाँ सरकार, कानून और सामाजिक परिस्थितियाँ परिपूर्ण होती हैं।" बाइबल सिखाती है कि मानवता अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं नहीं कर सकती।

²³ प्रभु, मैं जानता हूँ कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है; चलने वाले मनुष्य के लिए अपने कदमों को स्वयं निर्देशित करना संभव नहीं है। (यिर्मयाह 10:23, जब तक अन्यथा इंगित न किया जाए, संपूर्ण पाठ एनकेजेवी में है)

बाइबल सिखाती है कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग विफल होगा:

¹⁶ उनके मार्ग में विनाश और दुख निहित हैं; ¹⁷ और उन्हें शांति का मार्ग ज्ञात नहीं है। ¹⁸ उनकी आंखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं है। (रोमियों 3:16-18)

फिर भी, कई मनुष्य एक आदर्श समाज की अपनी कल्पना को साकार करने की दिशा में काम कर रहे हैं और कभी-कभी धर्म को भी इसमें शामिल करने का प्रयास करते हैं। लेकिन लगभग कोई भी एकमात्र सच्चे ईश्वर के मार्ग पर चलने को तैयार नहीं है। ऐसा नहीं है कि संयुक्त राष्ट्र या वेटिकन के किसी भी लक्ष्य की दिशा में कोई प्रगति नहीं होगी। कुछ प्रगति होगी (और इनमें से कई लक्ष्य अच्छे हैं), साथ ही कुछ रुकावटें भी आएंगी।

वास्तव में, और संभवतः बड़े संघर्ष के बाद, एक प्रकार का अंतर्राष्ट्रीय शांति समझौता होगा और उसकी पुष्टि की जाएगी (डेनियल 9:27)। जब ऐसा होगा, तो बहुत से लोग गलत धारणा बना लेंगे कि मानवता एक अधिक शांतिपूर्ण और आदर्श समाज की स्थापना कर रही है।

बहुत से लोग इस तरह की अंतरराष्ट्रीय 'आदर्शवादी प्रगति' (देखें यहजेकेल 13:10) और विभिन्न चमत्कारों और अद्भुत कार्यों (2 थिस्सलुनीकियों 2:9-12) से प्रभावित हो जाएंगे। लेकिन बाइबल कहती है कि ऐसी शांति स्थायी नहीं होगी (दानिएल 9:27; 11:31-44), चाहे नेता कुछ भी दावा करें (1 थिस्सलुनीकियों 5:3; यशायाह 59:8)।

यह विचार कि यीशु के अलावा (देखें यूहन्ना 15:5; मत्ती 24:21-22) मानवता इस 'वर्तमान बुराई के युग' में स्वर्ग ला सकती है, एक झूठा सुसमाचार है (गलातियों 1:3-10)।

यदि मानवता अकेले ही वास्तव में एक आदर्श समाज को साकार करने में पूरी तरह असमर्थ है, तो क्या किसी भी प्रकार का आदर्श समाज संभव है?

हाँ।

ईश्वर का राज्य इस ग्रह को और बाद में, समस्त अनंत काल को असाधारण रूप से बेहतर बना देगा।

2. यीशु ने किस सुसमाचार का प्रचार किया?

बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर के राज्य नामक एक आदर्श समाज मानव सरकारों की जगह लेगा (डेनियल 2:44; प्रकाशितवाक्य 11:15; 19:1-21)।

जब यीशु ने अपना सार्वजनिक उपदेश देना शुरू किया, तो उन्होंने सबसे पहले उपदेश देना शुरू किया। **परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार मार्क** ने जो बताया वह इस प्रकार है:

¹⁴ यूहन्ना के कारावास में डाले जाने के बाद, यीशु गलील में आए और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने लगे। ¹⁵ और उन्होंने कहा, “समय पूरा हो गया है, और परमेश्वर का राज्य निकट है। पश्चाताप करो, और सुसमाचार पर विश्वास करो।” (मरकुस 1:14-15)

सुसमाचार शब्द ग्रीक शब्द से आया है, जिसका लिप्यंतरण इस प्रकार है: यूएंजेलियन और इसका अर्थ है “अच्छा संदेश” या “अच्छी खबर”। नए नियम में, ईश्वर के राज्य से संबंधित अंग्रेजी शब्द “राज्य” का उल्लेख एलकेजी में लगभग 149 बार और में 151 बार किया गया है। डौए रीमिक्स बाइबिल यह ग्रीक शब्द से आया है जिसका लिप्यंतरण इस प्रकार है। साम्राज्य जो राजशाही के शासन या क्षेत्र को दर्शाता है।

मनुष्य के राज्य, साथ ही परमेश्वर के राज्य में, एक राजा होता है (प्रकाशितवाक्य 17:14), वे एक भौगोलिक क्षेत्र को कवर करते हैं (प्रकाशितवाक्य 11:15), उनके पास नियम होते हैं (यशायाह 2:3-4; 30:9), और उनके पास प्रजा होती है (लूका 13:29)।

मती द्वारा दर्ज की गई यीशु की पहली सार्वजनिक शिक्षा यह है:

²³ और यीशु गलीलिया के सारे इलाकों में घूम-घूमकर उनकी सभाओं में शिक्षा देते और राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते रहे। (मती 4:23)

मैथ्यू ने यह भी दर्ज किया है:

³⁵ तब यीशु सभी नगरों और गांवों में जाकर उनकी सभाओं में शिक्षा देते हुए राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते थे। (मती 9:35)

नए नियम में दर्शाया गया है कि यीशु सदा के लिए शासन करेंगे:

³³ और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का कोई अंत नहीं होगा। (लूका 1:33)

लूका ने दर्ज किया है कि यीशु को जिस उद्देश्य से भेजा गया था, वह परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना था। ध्यान दीजिए कि यीशु ने क्या सिखाया:

⁴³ उसने उनसे कहा, “मुझे परमेश्वर के राज्य का प्रचार दूसरे नगरों में भी करना है, क्योंकि मुझे इसी उद्देश्य से भेजा गया है।” (लूका 4:43)

क्या आपने कभी यह उपदेश सुना है? क्या आपको कभी यह एहसास हुआ है कि यीशु को भेजे जाने का उद्देश्य परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना था?

लूका ने यह भी दर्ज किया है कि यीशु किया जाए और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो:

¹⁰ और जब प्रेरित लौट आए, तो उन्होंने उसे अपने सारे काम बताए। फिर वह उन्हें अपने साथ लेकर बेथसैदा नामक नगर के एक सुनसान स्थान पर एकांत में चला गया। ¹¹ लेकिन जब भीड़ को यह पता चला, तो वे उसके पीछे-पीछे चले; और उसने उनका स्वागत किया और उनसे परमेश्वर के राज्य के विषय में बातें कीं। (लूका 9:10-11)

यीशु ने सिखाया कि जो लोग उनका अनुसरण करना चाहते हैं, उनके लिए परमेश्वर का राज्य सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए:

³³ परन्तु सर्वप्रथम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो।
(मती 6:33)

³¹ लेकिन परमेश्वर के राज्य को खोजो, और ये सब चीजें तुम्हें मिल जाएंगी। ³² हे छोटी मंडली, डरो मत, क्योंकि तुम्हारे पिता की यही इच्छा है कि वह तुम्हें राज्य दे। (लूका 12:31-32)

ईसाइयों को सर्वप्रथम परमेश्वर के राज्य की खोज करनी चाहिए। वे ऐसा तभी कर सकते हैं जब वे मसीह के बताए मार्ग पर चलकर और उनके आगमन और राज्य की प्रतीक्षा करके इसे अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाएं। फिर भी, अधिकांश मसीह में विश्वास करने वाले न केवल परमेश्वर के राज्य की खोज नहीं करते, बल्कि वे यह भी नहीं जानते कि यह क्या है। कई लोग यह भी गलत धारणा रखते हैं कि सांसारिक राजनीति में शामिल होना ही परमेश्वर ईसाइयों से अपेक्षा करता है। परमेश्वर के राज्य को न समझ कर, वे

या तो वे अभी वैसे ही जिएं जैसे उन्हें जीना चाहिए या यह समझें कि मानवता इतनी त्रुटिपूर्ण क्यों है।

यह भी ध्यान दें कि राज्य एक छोटे से झुंड को दिया जाएगा (रोमियों 11:5 देखें)। सच्चे छोटे झुंड का हिस्सा बनने के लिए विनम्रता की आवश्यकता होती है।

पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य अभी तक स्थापित नहीं हुआ है।

यीशु ने सिखाया कि उनके अनुयायियों को राज्य के आने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, इसलिए यह उनके पास पहले से ही नहीं है:

⁹ हे स्वर्ग में हमारे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा पूरी हो। (मती 6:9-10)

यीशु ने अपने शिष्यों को परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के लिए भेजा:

¹ फिर उसने अपने बारह शिष्यों को एक साथ बुलाया और उन्हें सभी दुष्ट आत्माओं पर अधिकार और रोग ठीक करने की शक्ति प्रदान की। ² उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के लिए भेजा। (लूका 9:1-2)

यीशु ने सिखाया कि केवल उनकी उपस्थिति ही राज्य नहीं थी, क्योंकि उस समय पृथ्वी पर राज्य स्थापित नहीं था, इसलिए उन्होंने उस समय अपने नाम से दुष्ट आत्माओं को नहीं निकाला था।

²⁸ लेकिन यदि मैं परमेश्वर की आत्मा के द्वारा दुष्ट आत्माओं को निकालता हूँ, तो निश्चय ही परमेश्वर का राज्य तुम पर आ गया है। (मत्ती 12:28)

सच्चा राज्य भविष्य में है—अभी नहीं, जैसा कि मार्क ने दिखाया है:

⁴⁷ और यदि तुम्हारी आँख तुम्हें पाप करने का कारण बनती है, तो उसे निकाल दो। तुम्हारे लिए एक आँख से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना बेहतर है, बजाय इसके कि दोनों आँखें होने के कारण तुम्हें निकाल दिया जाए... (मरकुस 9:47)

²³ यीशु ने चारों ओर देखकर अपने शिष्यों से कहा, “धनवानों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!” ²⁴ और उनके शिष्य यीशु के शब्दों को सुनकर चकित रह गए। परन्तु यीशु ने फिर उत्तर देते हुए उनसे कहा, “बच्चों, जो धन-दौलत पर भरोसा रखते हैं, उनके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!” ²⁵ “एक धनी व्यक्ति के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना उतना ही मुश्किल है जितना कि एक ऊँट के लिए सुई के छेद से निकलना।” (मरकुस 10:23-25)

²⁵ मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं अब कभी भी अंगूर का रस नहीं पीऊँगा, जब तक कि मैं उसे परमेश्वर के राज्य में नए सिरे से न पीऊँ। (मरकुस 14:25)

⁴³ अरीमथिया के यूसुफ, जो एक प्रमुख परिषद सदस्य थे और स्वयं परमेश्वर के राज्य के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और साहस जुटा रहे थे... (मरकुस 15:43)

यीशु ने सिखाया कि ईश्वर का राज्य अब इस वर्तमान संसार का हिस्सा नहीं है:

³⁶ यीशु ने उत्तर दिया, “मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक यह सुनिश्चित करने के लिए लड़ते कि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाए; परन्तु अब मेरा राज्य यहाँ का नहीं है।” (यूहन्ना 18:36)

यीशु ने सिखाया कि राज्य उनके राजा के रूप में लौटने के बाद ही आएगा:

³¹ जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और उसके साथ सभी पवित्र स्वर्गदूत होंगे, तब वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा। ³² सभी राष्ट्र उसके सामने एकत्रित होंगे, और वह उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा, जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों को बकरियों से अलग करता है। ³³ और वह भेड़ों को अपने दाहिने हाथ की ओर और बकरियों को अपने बाएं हाथ की ओर रखेगा। ³⁴ तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, “हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के वारिस बनो जो जगत की उत्पत्ति से ही तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।” (मत्ती 25:31-34)

क्योंकि परमेश्वर का राज्य अभी यहाँ नहीं है, इसलिए जब तक यह स्थापित नहीं हो जाता, तब तक हमें एक वास्तविक आदर्श राज्य देखने को नहीं मिलेगा। क्योंकि अधिकांश लोग परमेश्वर के राज्य को नहीं समझते, इसलिए वे यह समझने में असफल रहते हैं कि उनका प्रेमपूर्ण शासन कैसे कार्य करता है।

परमेश्वर का राज्य तब तक नहीं आएगा “जब तक अन्यजातियों की परिपूर्णता न आ जाए” (रोमियों 11:25)—और ऐसा अभी तक नहीं हुआ है।

यीशु ने राज्य के बारे में क्या कहा था?

यीशु ने परमेश्वर के राज्य के बारे में कुछ स्पष्टीकरण दिए:

²⁶ और उसने कहा, “परमेश्वर का राज्य ऐसा है मानो कोई मनुष्य जमीन पर बीज बोए।” ²⁷ और वह रात को सोए और दिन में उठेगा, और बीज अंकुरित होकर बढ़ेगा, यह वह स्वयं नहीं जानता कि यह कैसे होगा। ²⁸ क्योंकि धरती अपने आप ही फसलें उगती है: पहले पत्ती, फिर बाली, और उसके बाद बाली में पूरा दाना। ²⁹ लेकिन जब अनाज पक जाता है, तो वह तुरंत हंसिया चला देता है, क्योंकि फसल काटने का समय आ गया होता है। (मरकुस 4:26-29)

¹⁸ फिर उन्होंने कहा, “परमेश्वर का राज्य कैसा है? और मैं इसकी तुलना किससे करूँ?” ¹⁹ यह सरसों के बीज के समान है, जिसे एक व्यक्ति ने लेकर अपने बगीचे में बोया; और वह उगा और एक विशाल वृक्ष बन गया, और आकाश के पक्षियों ने उसकी शाखाओं में घोंसले बना लिए। ²⁰ और फिर उन्होंने कहा, “मैं परमेश्वर के राज्य की तुलना किससे करूँ?” ²¹ यह खमीर के समान है, जिसे एक स्त्री ने लिया और तीन माप आटे में छिपा दिया, जिससे सारा आटा खमीर हो गया। (लूका 13:18-21)

ये दृष्टांत बताते हैं कि शुरुआत में ईश्वर का राज्य काफी छोटा है, लेकिन वह विशाल हो जाएगा - अंततः यह एक अनंत ब्रह्मांड पर व्याप्त होगा।

ल्यूक ने यह भी दर्ज किया:

²⁹ वे पूरब और पश्चिम से, उत्तर और दक्षिण से आएंगे और परमेश्वर के राज्य में बैठेंगे। (लूका 13:29)

इस प्रकार, परमेश्वर के राज्य में संसार के सभी भागों से लोग होंगे। यह केवल इस्राएली वंश या विशिष्ट जातीय समूहों तक सीमित नहीं होगा। सभी भागों से लोग इस राज्य में निवास करेंगे।

लूका 17 और राज्य

लूका 17:20-21 कुछ लोगों को उलझन में डालता है। लेकिन उस पर आने से पहले, ध्यान दें कि लोग वास्तव में परमेश्वर के राज्य में भोजन करेंगे:

¹⁵ "धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा!" (लूका 14:15)

चूंकि लोग (भविष्य में) परमेश्वर के राज्य में भोजन करेंगे, इसलिए यह अब उनके दिलों में अलग रखी गई कोई बात नहीं है, लूका 17:21 के गलत अनुवादों/गलतफहमियों के बावजूद जो इसके विपरीत सुझाव देते हैं।

लूका 17:20-21 का AFV अनुवाद कुछ लोगों को समझने में मदद कर सकता है:

²⁰ जब फरीसियों ने उनसे पूछा कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा, तो उन्होंने उत्तर दिया, "परमेश्वर का राज्य प्रतीक्षा करने से नहीं आता; ²¹ न तो वे कहेंगे, 'देखो, यह यहां है!' या, 'देखो, यह वहाँ है!' क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में स्थित है।" (लूका 17:20-21, AFV; एनएसबी और ईएसवी अनुवाद भी देखें)

ध्यान दें कि यीशु उन फरीसियों से बात कर रहे थे जिन्होंने अपना विश्वास नहीं बदला था, जो सांसारिक और पाखंडी थे। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया - प्रश्न तो फरीसियों ने ही पूछा था। उन्होंने यीशु को पहचानने से इनकार कर दिया था।

क्या वे चर्च में थे? नहीं!

यीशु किसी ऐसे चर्च के बारे में बात नहीं कर रहे थे जिसका जल्द ही गठन होने वाला था। न ही वे मन या हृदय की भावनाओं के बारे में बात कर रहे थे।

यीशु अपने राज्य के बारे में बात कर रहे थे! फरीसी उनसे किसी कलीसिया के बारे में नहीं पूछ रहे थे। उन्हें नए नियम की किसी भी कलीसिया के बारे में कुछ भी पता नहीं था जो जल्द ही शुरू होने वाली थी। वे किसी भावुकतापूर्ण बात के बारे में नहीं पूछ रहे थे।

यदि कोई यह मानता है कि परमेश्वर का राज्य है कलीसिया है — और परमेश्वर का राज्य फरीसियों के “अंदर” था — तो क्या कलीसिया फरीसियों के अंदर थी? स्पष्ट रूप से नहीं!

ऐसा निष्कर्ष निकालना हास्यास्पद लगता है, है ना? जबकि कुछ प्रोटेस्टेंट अनुवाद लूका 17:21 के एक भाग का अनुवाद "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है" (एनकेजेवी/केजेवी) के रूप में करते हैं, वहीं रोमन कैथोलिक अनुवाद भी ऐसा ही अनुवाद करते हैं। नया यरूशलेम बाइबल इसका सही अनुवाद है, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच है।"

यीशु फरीसियों के बीचों बीच मौजूद थे—उन्हें उस राज्य का राजा बनना था। फरीसी सोचते थे कि वे परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन वे इसे गलत समझ रहे थे। यीशु ने समझाया कि यह केवल यहूदियों के लिए एक स्थानीय या सीमित राज्य नहीं होगा, जैसा कि वे सोचते थे (और न ही एक चर्च जैसा कि कुछ लोग अब जानते हैं)। परमेश्वर का राज्य केवल कई मानवीय और प्रत्यक्ष राज्यों में से एक नहीं होगा जिसे लोग देखकर कह सकें, "यही वह राज्य है" या "वह राज्य वहाँ है।"

यीशु स्वयं उस राज्य के राजा बनने के लिए पैदा हुए थे, जैसा कि उन्होंने पिलातुस को स्पष्ट रूप से बताया था (यूहन्ना 18:36-37)। यह समझें कि बाइबल में अक्सर “राजा” और “राज्य” शब्दों का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है (उदाहरण के लिए डेनियल 7:17-18,23)। परमेश्वर के भावी राज्य के राजा उस समय फरीसियों के बगल में खड़े थे। लेकिन उन्होंने उन्हें अपना राजा नहीं माना (यूहन्ना 19:21)। जब वे लौटेंगे, तो संसार उन्हें अस्वीकार कर देगा (प्रकाशितवाक्य 19:19)।

लूका 17 के अगले छंदों में यीशु ने अपने दूसरे आगमन का वर्णन किया, जब परमेश्वर का राज्य सारी पृथ्वी पर शासन करेगा (मोफैट अनुवाद का उपयोग करते हुए):

22 उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, “एक दिन ऐसा आएगा जब तुम मनुष्य के पुत्र का एक दिन पाने के लिए व्यर्थ ही तरसोगे।” 23 लोग कहेंगे, 'देखो, वह यहाँ है!' 'देखो, वह वहाँ है!' लेकिन उनके पीछे मत भागो और न ही उनके पीछे दौड़ो। 24 क्योंकि जैसे बिजली आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र अपने दिन आएगा। 25 लेकिन उसे पहले बहुत कष्ट सहना होगा और वर्तमान पीढ़ी द्वारा ठुकराया जाना होगा। (लूका 17:22-25, मोफैट)

यीशु ने बिजली चमकने का जिक्र किया, ठीक वैसे ही जैसे मती 24:27-31 में, अपने दूसरे आगमन का वर्णन करते हुए, जब वे पूरी दुनिया पर शासन करेंगे। यीशु यह नहीं कह रहे हैं कि उनके लोग उनके लौटने पर उन्हें नहीं देख पाएंगे—वे देखेंगे (देखें प्रेरितों के काम 1:11)।

फिर भी, अधिकांश लोग उन्हें अपना राजा नहीं मानेंगे (प्रकाशितवाक्य 11:15) और उनके विरुद्ध लड़ेंगे (प्रकाशितवाक्य 19:19)! बहुत से लोग सोचेंगे कि यीशु मसीह-विरोधी का प्रतिनिधित्व करते हैं। यीशु यह नहीं कह रहे थे कि परमेश्वर का राज्य उन फरीसियों के भीतर है—उन्होंने उन्हें कहीं और बताया था कि वे अपने कपट के कारण राज्य में नहीं होंगे (मती 23:13-14)। न ही यीशु यह कह रहे थे कि कलीसिया ही राज्य होगी।

परमेश्वर का राज्य वह है जिसमें मनुष्य एक दिन प्रवेश कर सकेंगे—जैसे धर्मी लोगों के पुनरुत्थान पर! फिर भी, अब्राहम और अन्य कुलपतियाँ अभी तक वहाँ नहीं पहुँची हैं (देखें इब्रानियों 11:13-40)।

शिष्यों को पता था कि परमेश्वर का राज्य उस समय व्यक्तिगत रूप से उनके भीतर नहीं था, और यह प्रकट होना ही था, जैसा कि लूका 17:21 के बाद आने वाला निम्नलिखित कथन दर्शाता है:

¹¹ ये सब सुनकर उन्होंने एक और दृष्टांत सुनाया, क्योंकि वे यरूशलेम के निकट थे और उन्हें लगा कि परमेश्वर का राज्य शीघ्र ही प्रकट होगा। (लूका 19:11)

यह राज्य स्पष्ट रूप से भविष्य में था।

आप कैसे जान सकते हैं कि परमेश्वर का राज्य निकट है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए, यीशु ने भविष्यवाणियों से संबंधित घटनाओं की सूची दी (लूका 21:8-28) और फिर सिखाया:

²⁹ अंजीर के पेड़ को देखो, और सभी पेड़ों को देखो। ³⁰ जब उनमें कलियाँ निकलने लगती हैं, तो आप स्वयं देख और जान जाते हैं कि अब गर्मी का मौसम नजदीक है। ³¹ तो आप भी, **जब आप इन चीजों को होते हुए देखें, तो जान लें कि परमेश्वर का राज्य निकट है।** (लूका 21:29-31)

यीशु चाहते थे कि उनके लोग भविष्यवाणियों से संबंधित घटनाओं का अनुसरण करें ताकि उन्हें पता चले कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा। यीशु ने अन्यत्र भी अपने लोगों से भविष्यवाणियों से संबंधित घटनाओं पर ध्यान देने और गौर करने को कहा (लूका 21:36; मरकुस 13:33-37)। यीशु के इन शब्दों के बावजूद, बहुत से लोग भविष्यवाणियों से जुड़ी विश्व घटनाओं पर ध्यान देने को महत्व नहीं देते।

लूका 22 और 23 में, यीशु ने एक बार फिर दिखाया कि परमेश्वर का राज्य भविष्य में पूरा होगा, जब उन्होंने यह सिखाया:

¹⁵ “दुख भोगने से पहले मैं तुम्हारे साथ यह फसह का भोज खाने की प्रबल इच्छा रखता हूँ; ¹⁶ मैं तुमसे कहता हूँ, जब तक परमेश्वर के राज्य में यह

बात पूरी न हो जाए, मैं इसे नहीं खाऊँगा।¹⁷ फिर उसने प्याला लिया, धन्यवाद दिया और कहा, "इसे लो और आपस में बाँट लो; ¹⁸ मैं तुमसे कहता हूँ, मैं परमेश्वर के राज्य के आने तक अंगूर का रस नहीं पीऊँगा। (लूका 22:15-18)

³⁹ लेकिन उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए उन दुष्टों में से एक ने उसकी निंदा करते हुए कहा, "यदि आप मसीहा हैं, तो स्वयं को बचाइए और हमें भी बचाइए।" ⁴⁰ और उसके साथी ने उसे फटकारा और उससे कहा, "क्या तुम परमेश्वर से डरते भी नहीं? क्योंकि तुम भी उसके साथ दंड के भागी हो।" ⁴¹ और यह उचित ही है, क्योंकि हम इसके योग्य हैं, क्योंकि हमें हमारे कर्मों के अनुसार प्रतिफल मिला है, परन्तु इस व्यक्ति ने कोई बुराई नहीं की है।" ⁴² और उसने येशु से कहा, "हे मेरे प्रभु, जब आप अपने राज्य में आएँ, तो मुझे याद रखना।" ⁴³ लेकिन यीशु ने उससे कहा, "जी हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ कि आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे।" (लूका 23:39-43, सरल अंग्रेजी में अरामी भाषा)

जैसा कि मरकुस और लूका दोनों हमें दिखाते हैं, यीशु की हत्या होते ही परमेश्वर का राज्य अस्तित्व में नहीं आ गया था:

⁴³ अरीमथिया के यूसुफ, जो एक प्रमुख परिषद सदस्य थे और स्वयं परमेश्वर के राज्य के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और साहस जुटा रहे थे... (मरकुस 15:43)

⁵¹ वो यहूदियों के नगर अरीमथिया का रहने वाला था, और वह स्वयं भी परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहा था। (लूका 23:51)

पुनरुत्थान के बाद (1 कुरिन्थियों 15:50-55) मसीही लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए फिर से जन्म लेंगे, जैसा कि यूहन्ना ने दर्ज किया है:

³ यीशु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक कोई व्यक्ति नया जन्म नहीं लेता, वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।”

⁴ निकोदेमुस ने उससे कहा, “वृद्धावस्था में मनुष्य का जन्म कैसे हो सकता है? क्या वह दूसरी बार अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करके जन्म ले सकता है?” ⁵ यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक कोई जल और आत्मा से जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।” (यूहन्ना 3:3-5)

केवल परमेश्वर के लोग ही सहस्राब्दी के बाद परमेश्वर के परम राज्य को देखेंगे।

अब कृपया यह भी समझें कि यीशु के पुनरुत्थान के बाद, उन्होंने फिर से परमेश्वर के राज्य के बारे में उपदेश दिया:

³ अपने कष्टों के बाद, उसने अनेक अचूक प्रमाणों से स्वयं को जीवित प्रकट किया; वह चालीस दिनों तक उनके दर्शन में रहा और परमेश्वर के राज्य से संबंधित बातों के विषय में बोलता रहा। (प्रेरितों के काम 1:3)

यीशु ने जो पहला और आखिरी उपदेश दिया, वह परमेश्वर के राज्य के बारे में था! यीशु उस राज्य के बारे में सिखाने के लिए संदेशवाहक बनकर आए थे।

यीशु ने प्रेरित यूहन्ना से पृथ्वी पर आने वाले सहस्राब्दी परमेश्वर के राज्य के बारे में भी लिखवाया। ध्यान दीजिए कि उन्होंने यूहन्ना से क्या लिखवाया:

⁴ मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा, जिसके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के लिए काट दिए गए थे; जिन्होंने न तो उस जानवर की पूजा की थी और न ही उसकी मूर्ति की, और न ही अपने माथे या हाथों पर उसका चिह्न लिया था। वे जीवित रहे और हजार वर्ष तक मसीह के साथ राज्य किया। (प्रकाशितवाक्य 20:4)

प्रारंभिक ईसाइयों ने सिखाया कि परमेश्वर का सहस्राब्दि राज्य पृथ्वी पर होगा और बाइबल के अनुसार दुनिया की सरकारों को प्रतिस्थापित करेगा (देखें प्रकाशितवाक्य 5:10, 11:15)।

अगर परमेश्वर का राज्य इतना महत्वपूर्ण है, तो इसके बारे में अधिकांश लोगों ने ज्यादा क्यों नहीं सुना है?

आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि यीशु ने इसे एक रहस्य कहा था:

¹¹ और उसने उनसे कहा, “तुम्हें परमेश्वर के राज्य का रहस्य जानने का अधिकार दिया गया है; परन्तु जो बाहर हैं, उन्हें सब बातें दृष्टांतों में समझाई जाती हैं।” (मरकुस 4:11)

आज भी परमेश्वर का सच्चा राज्य अधिकांश लोगों के लिए एक रहस्य है, जैसा कि परमेश्वर की योजना का अधिकांश भाग है (हमारी निःशुल्क पुस्तक भी देखें, जो ऑनलाइन उपलब्ध है)। www.ccog.org शीर्षक: ईश्वर की योजना का रहस्य: ईश्वर ने सब कुछ क्यों बनाया? ईश्वर ने आपको क्यों बनाया?).

यह भी ध्यान में रखें कि यीशु ने कहा था कि युग का अंत (शीघ्र) तब आएगा जब राज्य के सुसमाचार का प्रचार पूरी दुनिया में एक गवाही के रूप में किया जाएगा:

¹⁴ और राज्य का यह सुसमाचार सारी दुनिया में सब जातियों के लिए गवाही के रूप में प्रचारित किया जाएगा, और तब अंत आ जाएगा। (मती 24:14)

परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना महत्वपूर्ण है और इसे पूरा किया जाना चाहिए। **इन अंतिम समयों में** यह एक "अच्छा संदेश" है क्योंकि यह मानवता की समस्याओं के लिए वास्तविक आशा प्रदान करता है, भले ही राजनीतिक नेता कुछ भी सिखाएं।

यीशु के शब्दों पर गौर करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सच्चे ईसाई चर्च को आज ही राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। यह चर्च की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी

चाहिए। और इसे ठीक से करने के लिए, कई भाषाओं का उपयोग किया जाना चाहिए। है जिसे कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड करने का प्रयास करता है। और इसीलिए इस पुस्तिका का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

यीशु ने सिखाया कि अधिकांश लोग उनके मार्ग को स्वीकार नहीं करेंगे:

¹³ “तंग द्वार से प्रवेश करो; क्योंकि चौड़ा द्वार और चौड़ा मार्ग विनाश की ओर ले जाता है, और बहुत से लोग उसी से होकर जाते हैं।” ¹⁴ क्योंकि जीवन की ओर जाने वाला द्वार संकरा है और मार्ग कठिन है, और इसे पाने वाले कम हैं। (मत्ती 7:13-14)

परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार जीवन की ओर ले जाता है!

यह ध्यान देने योग्य बात हो सकती है कि यद्यपि अधिकांश ईसाई इस विचार से अनभिज्ञ प्रतीत होते हैं कि मसीह का जोर परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के प्रचार पर था, धर्मनिरपेक्ष धर्म शास्त्रों और इतिहासकारों ने अक्सर यह समझा है कि बाइबिल वास्तव में यही सिखाती है।

फिर भी, यीशु ने स्वयं अपने शिष्यों से परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने की अपेक्षा की थी (लूका 9:2,60)। क्योंकि भविष्य का राज्य परमेश्वर के नियमों पर आधारित होगा, इसलिए वह शांति और समृद्धि लाएगा—और इस युग में उन नियमों का पालन करना सच्ची शांति की ओर ले जाता है (भजन संहिता 119:165,172; इफिसियों 2:15)।

और राज्य के इस सुसमाचार का उल्लेख पुराने नियम के धर्मग्रंथों में किया गया था।

3. क्या पुराने नियम में परमेश्वर के राज्य का उल्लेख मिलता था?

यीशु के पहले और आखिरी दर्ज उपदेश में परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार की घोषणा शामिल थी (मरकुस 1:14-15; प्रेरितों के काम 1:3)।

ईश्वर का राज्य एक ऐसी चीज है जिसके बारे में यीशु के समय के यहूदियों को कुछ न कुछ जानकारी होनी चाहिए थी क्योंकि इसका उल्लेख उनके धर्मग्रंथों में किया गया था, जिसे अब हम पुराना नियम कहते हैं।

डेनियल ने राज्य के बारे में सिखाया

नबी डेनियल ने लिखा:

⁴⁰ और चौथा राज्य लोहे के समान बलवान होगा, क्योंकि लोहा सब कुछ तोड़-फोड़ कर चकनाचूर कर देता है; और लोहे की तरह जो कुचल देता है, वह राज्य भी अन्य सभी राज्यों को तोड़-फोड़ कर कुचल देगा। ⁴¹ जबकि तुमने पैरों और पैर की उंगलियों को देखा, जो आंशिक रूप से कुम्हार की मिट्टी और आंशिक रूप से लोहे से बने थे, राज्य विभाजित हो जाएगा; फिर भी लोहे की शक्ति उसमें बनी रहेगी, ठीक वैसे ही जैसे तुमने लोहे को मिट्टी के साथ मिला हुआ देखा था। ⁴² और जैसे पैरों की उंगलियां कुछ लोहे की और कुछ मिट्टी की बनी होती हैं, वैसे ही राज्य भी कुछ मजबूत और कुछ कमजोर होगा। ⁴³ जिस प्रकार तुमने मिट्टी में लोहा मिला हुआ देखा, उसी प्रकार वे मनुष्यों की संतान के साथ मिल जाएँगे; परन्तु वे आपस में चिपकेंगे नहीं, ठीक वैसे ही जैसे लोहा मिट्टी में नहीं मिलता। ⁴⁴ और इन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य स्थापित करेगा जो कभी नष्ट नहीं होगा; और वह राज्य किसी और को नहीं सौंपा जाएगा; वह इन सभी राज्यों को टुकड़े-टुकड़े कर नष्ट कर देगा, और वह सदा कायम रहेगा। (दानियल 2:40-44)

¹⁸परन्तु परमप्रधान के संत ही राज्य को प्राप्त करेंगे, और सदा-सदा के लिए उस राज्य पर अधिकार रखेंगे। (दानियल 7:18)

²¹“मैं देख रहा था, और वही सींग संतों के विरुद्ध युद्ध कर रहा था और उन पर विजय प्राप्त कर रहा था। ²² जब तक ‘आदि दिन’ आए, और परमप्रधान परमेश्वर के संतों के पक्ष में न्याय किया गया, और संतों के लिए राज्य का अधिकार प्राप्त करने का समय आया। (डेनियल 7:21-22)

दानियाल की पुस्तक से हमें यह ज्ञान प्राप्त होता है कि वह समय आएगा जब परमेश्वर का राज्य इस संसार के राज्यों को नष्ट कर देगा और अनन्त काल तक कायम रहेगा। हमें यह भी ज्ञान प्राप्त होता है कि इस राज्य को प्राप्त करने में संतों की भी भूमिका होगी।

दानियल की भविष्यवाणियों के कई अंश 21वीं शताब्दी के हमारे समय के लिए हैं।

नए नियम के कुछ अंशों पर ध्यान दें:

¹² “जो दस सींग तुमने देखे, वे दस राजा हैं जिन्हें अभी तक कोई राज्य प्राप्त नहीं हुआ है, परन्तु वे उस जानवर के साथ एक घंटे के लिए राजाओं के रूप में अधिकार प्राप्त करते हैं।” ¹³ ये सब एकमत हैं, और वे अपनी शक्ति और अधिकार उस जानवर को सौंप देंगे। ¹⁴ ये लोग मेमने से युद्ध करेंगे, और मेमना उन पर विजय प्राप्त करेगा, क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है; और जो उसके साथ हैं, वे बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासयोग्य हैं।” (प्रकाशितवाक्य 17:12-14)

इसलिए, हम पुराने और नए नियम दोनों में यह अवधारणा देखते हैं कि अंत समय में पृथ्वी पर एक राज्य होगा जिसके दस भाग होंगे और परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा और अपना राज्य स्थापित करेगा।

यशायाह ने राज्य के बारे में सिखाया

परमेश्वर ने यशायाह को परमेश्वर के राज्य के पहले भाग, हजार वर्ष के शासनकाल जिसे सहस्राब्दी के नाम से जाना जाता है, के बारे में इस प्रकार लिखने के लिए प्रेरित किया:

¹ यिशै की जड़ से एक शाखा निकलेगी, और उसकी जड़ों से एक शाखा बढ़ेगी। ² प्रभु की आत्मा उस पर निवास करेगी, ज्ञान और समझ की आत्मा, परामर्श और शक्ति की आत्मा, ज्ञान और प्रभु के भय की आत्मा।

³ उसका आनंद प्रभु के भय में है, और वह अपनी आँखों से देखकर न्याय नहीं करेगा, ना ही अपने कानों से सुनकर निर्णय लेगा; ⁴ परन्तु वह धर्मपूर्वक गरीबों का न्याय करेगा, और निष्पक्षता से निर्णय करेगा।

पृथ्वी के नम्र लोगों के लिए; वह अपने मुख के दंड से पृथ्वी पर प्रहार करेगा, और अपने होठों की साँस से दुष्टों का नाश करेगा। ⁵ धर्म उसकी कमर का पट्टा होगा, और वफादारी उसकी कमर की पट्टी होगी।

⁶ “भेड़िया मेमने के साथ रहेगा, तेंदुआ बकरी के बच्चे के साथ लेटेगा, बछड़ा, शेर का बच्चा और मोटा बछड़ा एक साथ रहेंगे; और एक छोटा बच्चा उनका नेतृत्व करेगा।” ⁷ गाय और भालू चरेंगे; उनके बच्चे एक साथ लेटेंगे; और शेर बैल की तरह घास खाएगा। ⁸ दूध पीने वाला बच्चा कोबरा के बिल के पास खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ बच्चा अपना हाथ साँप के बिल में डालेगा।⁹ वे मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो हानि पहुँचाएँगे और न ही विनाश करेंगे, क्योंकि पृथ्वी प्रभु के ज्ञान से भर जाएगी, जैसे जल समुद्र को ढक लेता है।

¹⁰ “और उस दिन यिशै की एक जड़ होगी, जो लोगों के लिए ध्वज के समान खड़ी होगी; क्योंकि अन्यजाति उसे खोजेंगे, और उसका विश्राम स्थान महिमामय होगा।” (यशायाह 11:1-10)

मैंने इसे परमेश्वर के राज्य का पहला भाग या पहला चरण इसलिए कहा है, क्योंकि यह एक ऐसा समय है जब यह भौतिक रूप से विद्यमान होगा (पवित्र नगर, नया यरूशलेम, स्वर्ग से उतरने से पहले, प्रकाशितवाक्य 21) और एक हजार वर्ष तक चलेगा। यशायाह ने इस चरण के भौतिक पहलू की पुष्टि करते हुए आगे कहा:

¹¹ उस दिन ऐसा होगा कि प्रभु दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाएगा, ताकि वह अपने बचे हुए लोगों को, जो अश्शूर और मिस्र से, पथरोस और कूश से, एलाम और शिनार से, हमाथ और समुद्र के द्वीपों से, पुनः प्राप्त करे।

¹² वह राष्ट्रों के लिए एक ध्वज खड़ा करेगा, और इस्राएल के निर्वासितों को एकत्रित करेगा, और यहूदा के बिखरे हुए लोगों को पृथ्वी के चारों कोनों से इकट्ठा करेगा। ¹³ और एप्रैम की ईर्ष्या दूर हो जाएगी, और यहूदा के शत्रु नष्ट हो जाएंगे; एप्रैम यहूदा से ईर्ष्या नहीं करेगा, और यहूदा एप्रैम को परेशान नहीं करेगा। ¹⁴ लेकिन वे पश्चिम की ओर पलिशितियों के कंधों पर झपटने; वे मिलकर पूर्व के लोगों को लूटेंगे; वे एदोम और मोआब पर अपना हाथ डालेंगे; और अम्मोन के लोग उनकी आज्ञा मानेंगे। ¹⁵ प्रभु मिस्र सागर की जीभ को पूरी तरह नष्ट कर देगा; वह अपनी शक्तिशाली हवा से नदी पर अपनी मुट्ठी हिलाएगा, और उसे सात धाराओं में विभाजित कर देगा, और मनुष्यों को सूखे पैरों से पार करा देगा। ¹⁶ उसके लोगों के शेष भाग के लिए, जो अश्शूर से बच जाएंगे, एक राजमार्ग होगा, जैसा कि इस्राएल के लिए उस दिन था जब वह मिस्र देश से निकला था। (यशायाह 11:11-16)

यशायाह को यह लिखने की प्रेरणा भी मिली:

² अब ऐसा होगा कि अंतिम दिनों में यहोवा के घर का पर्वत पहाड़ों की चोटी पर स्थापित होगा, और पहाड़ियों से ऊपर उठाया जाएगा; और सभी राष्ट्रों की ओर बहेंगे। ³ बहुत से लोग आकर कहेंगे, “आओ, हम यहोवा के पर्वत पर, याकूब के परमेश्वर के घर में चलें; वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके मार्गों पर चलेंगे।” **क्योंकि सिय्योन से ही व्यवस्था निकलेगी**

और यरूशलेम से प्रभु का वचन। ⁴ वह राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा, और बहुत से लोगों को फटकारेगा; वे अपनी तलवारों को हल में और अपने भालों को छंटाई के औजारों में बदल देंगे; **एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा, न ही वे युद्ध करना सीखेंगे...** ¹¹ मनुष्य का अहंकार चूर-चूर हो जाएगा, उसका घमंड चूर-चूर हो जाएगा, और उस दिन केवल प्रभु ही महान होगा। (यशायाह 2:2-4,11)

इस प्रकार, यह पृथ्वी पर शांति का एक आदर्श समय होगा। अंततः, यह शांति यीशु के शासन के साथ शाश्वत रहेगी। विभिन्न धर्मग्रंथों (भजन संहिता 90:4; 92:1; यशायाह 2:11; होशे 6:2) के आधार पर, यहूदी तल्मूड सिखाता है कि यह 1,000 वर्षों तक कायम रहेगा (Babylonian Talmud: Tractate Sanhedrin Folio 97a)।

यशायाह को निम्नलिखित लिखने की प्रेरणा भी मिली:

⁶ क्योंकि हमारे लिए एक बालक का जन्म हुआ है, हमारे लिए एक पुत्र दिया गया है; और शासन उसके कंधों पर होगा। और उसका नाम अद्भुत, सलाहकार, सर्वशक्तिमान ईश्वर, शाश्वत पिता, शांति का राजकुमार कहलाएगा। ⁷ उनके शासन और शांति की वृद्धि अनंत होगी, दाऊद के सिंहासन पर और उनके राज्य पर, इसे व्यवस्थित करने और न्याय और निष्पक्षता के साथ स्थापित करने के लिए, उस समय से लेकर सदा तक। सेनाओं के प्रभु का उत्साह इसे पूरा करेगा। (यशायाह 9:6-7)

ध्यान दें कि यशायाह ने कहा था कि यीशु आएंगे और एक शासन व्यवस्था के साथ एक राज्य स्थापित करेंगे। हालाँकि मसीह में विश्वास करने वाले कई लोग, विशेषकर हर साल दिसंबर में, इस वचन का हवाला देते हैं, लेकिन वे इस बात को नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि यह केवल यीशु के जन्म की भविष्यवाणी से कहीं अधिक है। बाइबल दर्शाती है कि परमेश्वर के राज्य में एक शासन व्यवस्था है जिसके अंतर्गत प्रजा पर नियम लागू होते हैं, और यीशु उस राज्य के राजा होंगे। यशायाह, डेनियल और अन्य लोगों ने इसकी भविष्यवाणी की थी।

परमेश्वर के नियम प्रेम का मार्ग हैं (मत्ती 22:37-40; यूहन्ना 15:10) और परमेश्वर का राज्य इन्हीं नियमों के आधार पर शासित होगा। अतः, संसार में बहुत से लोग इसे चाहे जिस रूप में देखें, परमेश्वर का राज्य प्रेम पर आधारित होगा।

भजन संहिता और अन्य

केवल डेनियल और यशायाह ही नहीं, परमेश्वर ने आने वाले परमेश्वर के राज्य के बारे में लिखने के लिए उन्हें प्रेरित किया था।

यहेजकेल को यह लिखने की प्रेरणा मिली कि सभी द जनजाति महासंकट के समय में तितर-बितर हुए इस्राएल के लोग (न केवल यहूदी) सहस्राब्दि राज्य में एकत्रित किए जाएंगे:

¹⁷ इसलिए कहो, 'परमेश्वर यहोवा यों कहता है: "मैं तुम्हें लोगों में से इकट्ठा करूँगा, उन देशों से जहाँ तुम बिखरे हुए हो, तुम्हें एकत्रित करूँगा, और मैं तुम्हें इस्राएल की भूमि दूँगा।"¹⁸ और वे वहाँ जाएँगे, और वहाँ से उसकी सभी घृणित वस्तुओं और सभी अपकृत्यों को हटा देंगे।¹⁹ तब मैं उन्हें एक हृदय दूँगा, और उनके भीतर एक नई आत्मा डालूँगा, और उनके शरीर से पत्थर का हृदय निकाल कर उन्हें मांस का हृदय दूँगा।²⁰ ताकि वे मेरी विधियों पर चलें, मेरे नियमों का पालन करें और उन्हें मानें; और वे मेरी प्रजा होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।²¹ लेकिन जिनके हृदय घृणित और निंदनीय वस्तुओं की लालसा में लगे हैं, उनके कर्मों का फल मैं उन्हीं के सिर पर देगा," यहोवा परमेश्वर कहता है। (यहेजकेल 11:17-21)

इस्राएल की जनजातियों के वंशज अब और नहीं बिखरेंगे, बल्कि परमेश्वर की विधियों का पालन करेंगे और घृणित चीजें खाना बंद कर देंगे (लेवी 11; व्यवस्थाविवरण 14)।

भजन संहिता में परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के बारे में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

²⁷ संसार के सभी छोर प्रभु को याद करेंगे और उनकी ओर मुड़ेंगे, और सभी राष्ट्रों के परिवार आपके सामने आराधना करेंगे। ²⁸ क्योंकि राज्य यहोवा का है, और वह राष्ट्रों पर शासन करता है। (भजन संहिता 22:27-28)

⁶ हे ईश्वर, आपका सिंहासन सदा-सदा के लिए स्थिर है; धर्म का राजदंड आपके राज्य का राजदंड है। (भजन संहिता 45:6)

¹ हे प्रभु, एक नया गीत गाओ! हे पृथ्वी के सभी लोगो, प्रभु के लिए गाओ।

² प्रभु की स्तुति करो, उसके नाम को धन्य कहो; प्रतिदिन उसके उद्धार के सुसमाचार का प्रचार करो। ³ राष्ट्रों के बीच उसकी महिमा का बखान करो, सभी लोगों के बीच उसके चमत्कारों का प्रचार करो। (भजन संहिता 96:1-3; साथ ही 1 इतिहास 16:23-24 भी देखें)

¹⁰ हे प्रभु, आपके समस्त कार्य आपकी स्तुति करेंगे, और आपके संत आपको आशीर्वाद देंगे। ¹¹ वे तेरे राज्य की महिमा का बखान करेंगे, और तेरी शक्ति की प्रशंसा करेंगे। ¹² ताकि वह मनुष्यों को अपने महान कार्यों और अपने राज्य की महिमा का ज्ञान करा सके। ¹³ आपका राज्य एक शाश्वत राज्य है, और आपका प्रभुत्व सभी पीढ़ियों तक बना रहता है। (भजन संहिता 145:10-13)

पुराने नियम के विभिन्न लेखकों ने भी राज्य के पहलुओं के बारे में लिखा (जैसे यहजकेल 20:33; ओबद्याह 21; मीका 4:7)।

इसलिए, जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना शुरू किया, तो उनके तात्कालिक श्रोताओं को मूल अवधारणा से कुछ हद तक परिचित थे।

4. क्या प्रेरितों ने भगवान के राज्य के सुसमाचार की शिक्षा दी?

हालांकि कई लोग यह मानते हैं कि सुसमाचार केवल यीशु के व्यक्तित्व के बारे में अच्छी खबर है, वास्तविकता यह है कि यीशु के अनुयायियों ने परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सिखाया। यही वह संदेश है जो यीशु लेकर आए थे।

प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर के राज्य और यीशु के बारे में शिक्षा दी:

⁸ और वह आराधनालय में गया और तीन महीने तक साहसपूर्वक परमेश्वर के राज्य की बातों के विषय में तर्क और विश्वास से बोलता रहा। (प्रेरितों 19:8)

²⁵ और अब मैं सचमुच जानता हूँ कि तुम सब, जिनके बीच मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता रहा हूँ, तुम ही हो। (प्रेरितों के काम 20:25)

²³ अतः जब उन्होंने उसके लिए एक दिन तय किया, तो बहुत से लोग उसके ठहरने की जगह पर आए, जिनसे उसने सुबह से शाम तक परमेश्वर के राज्य के बारे में समझाया और गंभीरतापूर्वक गवाही दी, और मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की शिक्षाओं से यीशु के विषय में उन्हें विश्वास दिलाया। ³¹ वह पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता है और प्रभु यीशु मसीह से संबंधित बातें सिखाता है, और कोई उसे मना नहीं करता। (प्रेरितों 28:23,31)

ध्यान दें कि परमेश्वर का राज्य केवल यीशु के बारे में नहीं है (यद्यपि वह इसका एक प्रमुख हिस्सा हैं), क्योंकि पौलुस ने परमेश्वर के राज्य के बारे में जो कुछ सिखाया, उससे अलग यीशु के बारे में भी सिखाया।

पौलुस ने इसे परमेश्वर का सुसमाचार भी कहा, लेकिन वह फिर भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार ही था:

⁹ हमने तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार सुनाया... ¹² ताकि तुम उस परमेश्वर के योग्य चाल चलो जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है। (1 थिस्सलुनीकियों 2:9,12)

पौलुस ने इस मसीह का सुसमाचार भी कहा (रोमियों 1:16)। यीशु का “अच्छा संदेश”, वह संदेश जो उन्होंने सिखाया।

ध्यान रहे कि यह केवल यीशु मसीह के व्यक्तित्व या व्यक्तिगत उद्धार के बारे में सुसमाचार नहीं था। पौलुस ने कहा कि मसीह के सुसमाचार में यीशु की आज्ञा मानना, उनका पुनरागमन और परमेश्वर का न्याय शामिल है:

⁶ जो लोग तुम्हें परेशान करते हैं, परमेश्वर उन्हें कष्टों से दंडित करेगा।⁷ और तुम जो व्याकुल हो, तुम्हें हमारे साथ विश्राम देने के लिए, जब प्रभु यीशु अपने सामर्थ्यवान स्वर्गदूतों के साथ स्वर्ग से प्रकट होंगे।⁸ भयंकर आग में उन लोगों से बदला लेते हुए जो परमेश्वर को नहीं जानते और जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का पालन नहीं करते। ⁹ इन्हें प्रभु की उपस्थिति और उनकी शक्ति की महिमा से अनन्त विनाश का दंड मिलेगा। ¹⁰ जब वह उस दिन आएगा, तो वह अपने संतों में महिमावान होगा और सभी विश्वासियों के बीच प्रशंसित होगा, क्योंकि तुम्हारे बीच हमारी गवाही पर विश्वास किया गया था। (2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10)

नया नियम दर्शाता है कि राज्य वह है जिसे हम प्राप्त करेंगे, न कि वह जो हम अभी पूरी तरह से प्राप्त कर चुके हैं:

²⁸ हमें एक ऐसा राज्य प्राप्त हो रहा है जिसे हिलाया नहीं जा सकता। (इब्रानियों 12:28)

हम अभी परमेश्वर के राज्य का हिस्सा बनने की उम्मीद कर सकते हैं और इसके लिए तत्पर भी हो सकते हैं, लेकिन हमने अभी तक पूरी तरह से उसमें प्रवेश नहीं किया है।

पौलुस ने विशेष रूप से इस बात की पुष्टि की कि एक नश्वर मनुष्य के रूप में कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। बाद जी उठना:

⁵⁰ अब मैं यह कहता हूँ, भाइयों, कि मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं हो सकते; न ही नाशवान वस्तु अविनाशी वस्तु की उत्तराधिकारी हो सकती है। ⁵¹ देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूँ: हम सब सोएंगे नहीं, बल्कि हम सब बदल जाएंगे। ⁵² पल भर में, पलक झपकते ही, अंतिम तुरही बजने पर। क्योंकि तुरही बजेगी, और मरे हुए अविनाशी रूप में जी उठेंगे, और हम बदल जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:50-52)

¹ इसलिए मैं तुम्हें परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के समक्ष यह आदेश देता हूँ, जो अपने प्रकट होने और अपने राज्य में जीवित और मृतकों का न्याय करेंगे। (2 तिमोथी 4:1)

पौलुस ने न केवल यह सिखाया, बल्कि यह भी सिखाया कि यीशु परमेश्वर पिता को राज्य सौंप देगा:

²⁰ लेकिन अब मसीह मृतकों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें से पहला फल बन गया है। ²¹ क्योंकि मनुष्य के द्वारा ही मृत्यु आई, और मनुष्य के द्वारा ही मरे हुआ का पुनरुत्थान भी हुआ। ²² क्योंकि जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जीवित किए जाएंगे। ²³ लेकिन हर एक अपने-अपने क्रम में: मसीह प्रथम फल है, उसके बाद वे जो उसके आगमन पर मसीह के होंगे। ²⁴ फिर अंत आता है, जब वह राज्य को परमेश्वर पिता को सौंप देता है, जब वह सभी शासन और सभी अधिकार और शक्ति का अंत कर देता है। ²⁵ क्योंकि उसे तब तक राज्य करना है जब तक वह सभी शत्रुओं को अपने पैरों तले न कर दे। (1 कुरिन्थियों 15:20-25)

पौलुस ने यह भी सिखाया कि अधर्मी (आज्ञा तोड़ने वाले) परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं होंगे:

⁹ क्या तुम नहीं जानते कि अधर्मी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे? धोखे में मत आओ। न तो व्यभिचारी, न मूर्ति पूजा, न व्यभिचारी, न समलैंगिक, न गुदा मैथुन करने वाले। ¹⁰ न तो चोर, न लालची, न शराबी, न गाली देने वाले, ने जबरन वसूली करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। (1 कुरिन्थियों 6:9-10)

¹⁹ अब शरीर के काम स्पष्ट हैं, जो ये हैं: व्यभिचार, परस्त्रीगमन, अशुद्धता, कामुकता। ²⁰ मूर्तिपूजा, जादू-टोना, घृणा, झगड़े, ईर्ष्या, क्रोध का प्रकोप, स्वार्थी महत्वाकांक्षाएं, मतभेद, विधर्म ²¹ ईर्ष्या, हत्या, नशेबाजी, मौज-मस्ती और इसी प्रकार के अन्य बुरे कर्म; जिनके विषय में मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, जैसा कि मैंने तुम्हें पहले भी बताया था, कि जो लोग ऐसे कर्म करते हैं वे परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे। (गलतियों 5:19-21)

⁵ क्योंकि तुम यह जानते हो कि व्यभिचारी, अशुद्ध व्यक्ति, या लालची व्यक्ति, जो मूर्ति पूजा है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में किसी भी प्रकार का उत्तराधिकार नहीं पाएगा। (इफिसियों 5:5)

ईश्वर के अपने मानदंड हैं और उनके राज्य में प्रवेश करने के लिए पाप से पश्चाताप करना आवश्यक है। पवित्र आत्मा को प्राप्त करने और उद्धार पाने के लिए ईश्वर की आज्ञा का पालन करना अनिवार्य है।

²⁹ पतरस और प्रेरितों ने कहा, “हमें मनुष्यों की बजाय परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए।” ³² और हम इन बातों के साक्षी हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने अपने आज्ञापालन करने वालों को दिया है। (प्रेरितों के काम 5:29,32, AFB)

⁵ ईसा मसीह... ⁸ यद्यपि वह पुत्र थे, फिर भी उन्होंने कष्ट सहकर ही आज्ञाकारिता सीखी। ⁹ और सिद्ध होने के बाद, वह उन सभी के लिए

अनन्त उद्धार का स्रोत बन गया जो उसकी आज्ञा मानते हैं। (इब्रानियों 5:5,8-9)

प्रेरित पौलुस ने चेतावनी दी कि कुछ लोग यह नहीं सिखाएंगे कि यीशु का सुसमाचार ही उत्तर है, लेकिन दूसरा तरीका भी स्वीकार्य है:

³ परमपिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा और शांति आप पर बनी रहे। ⁴ जिसने हमारे पापों के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया, ताकि वह हमें इस वर्तमान दुष्ट युग से हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार छुड़ा सके। ⁵ जिसकी महिमा सदा बनी रहे। आमीन। ⁶ मुझे आश्चर्य होता है कि आप इतनी जल्दी उस परमेश्वर से मुंह मोड़ रहे हैं जिसने आपको मसीह के अनुग्रह में बुलाया था, और एक भिन्न सुसमाचार की ओर मुड़ रहे हैं। ⁷ जो कि कोई और बात नहीं है; लेकिन कुछ लोग हैं जो तुम्हें परेशान करते हैं और मसीह के सुसमाचार को विकृत करना चाहते हैं। ⁸ परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो वह शापित हो। ⁹ जैसा हमने पहिले कहा है, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ, कि जिस सुसमाचार को तुमने ग्रहण किया है, उसके अलावा यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो वह शापित हो। (गलातियों 1:3-9)

³ लेकिन मुझे डर है कि कहीं ऐसा न हो कि जिस प्रकार सर्प ने अपनी धूर्तता से हव्वा को धोखा दिया, उसी प्रकार तुम्हारे मन भी मसीह में निहित सरलता से भ्रष्ट हो जाएं। ⁴ क्योंकि यदि आने वाला व्यक्ति किसी दूसरे यीशु का प्रचार करते जिसका प्रचार हमने नहीं किया, या यदि तुम कोई दूसरी आत्मा ग्रहण करो जो तुमने नहीं ग्रहण की, या कोई दूसरा सुसमाचार स्वीकार करो जिसे तुमने नहीं माना, तो तुम इसे सहन कर सकते हो! (2 कुरिन्थियों 11:3-4)

वह "दूसरा" और "अलग" वास्तव में झूठा सुसमाचार क्या था?

झूठे सुसमाचार के कई भाग हैं।

सामान्यतः, झूठा सुसमाचार यह विश्वास करना है कि आपको वास्तव में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने और उसके मार्ग पर सच्चे ढंग से जीने का प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है, जबकि आप उसे जानने का दावा करते हैं (देखें मत्ती 7:21-23)। यह स्वार्थपरक प्रवृत्ति से प्रेरित होता है।

लगभग 6000 वर्ष पूर्व सर्प ने हव्वा को बहकाकर झूठे सुसमाचार में फंसा लिया (उत्पत्ति 3)—और तब से मनुष्य यह मानते आए हैं कि वे ईश्वर से अधिक जानते हैं और उन्हें स्वयं ही अच्छे-बुरे का निर्णय करना चाहिए। जी हां, यीशु के आने के बाद, उनका नाम अक्सर विभिन्न झूठे सुसमाचारों से जोड़ा गया—और यह सिलसिला जारी है और अंतिम मसीह-विरोधी के समय तक जारी रहेगा।

प्रेरित पौलुस के समय में, झूठा सुसमाचार मूलतः ज्ञानवादी/रहस्यवादी विचारधारा का सत्य और झूठ का मिश्रण था। ज्ञानवादी मानते थे कि आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि, जिसमें उद्धार भी शामिल है, प्राप्त करने के लिए विशेष ज्ञान आवश्यक है। उनका मानना था कि शारीरिक इच्छाओं का कोई विशेष महत्व नहीं है और वे सातवें दिन के सब्त जैसे मामलों में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के विरोध थे। ऐसा ही एक झूठा नेता साइमन मागुस था, जिसे प्रेरित पतरस ने फटकारा/चेतावनी दी थी (प्रेरितों के काम 8:18-21)।

लेकिन यह आसान नहीं है

नए नियम से पता चलता है कि फिलिप ने परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया:

⁵ फिर फिलिप सामरिया नगर में गया और वहाँ के लोगों को मसीह का उपदेश दिया। ¹² उन्होंने फिलिप पर विश्वास किया क्योंकि उसने परमेश्वर के राज्य के विषय में प्रचार किया था... (प्रेरितों के काम 8:5,12)

फिर भी, यीशु, पौलुस और शिष्यों ने सिखाया कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना आसान नहीं है:

²⁴ और जब यीशु ने देखा कि वह बहुत दुखी हो गया है, तो उसने कहा, “धनवानों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!” ²⁵ क्योंकि किसी धनी व्यक्ति के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना उतना ही कठिन है जितना कि ऊँट के लिए सुई के छेद से निकलना।

²⁶ और उन्होंने यह सुना, उन्होंने कहा, “तो फिर कौन बच सकता है?”

²⁷ लेकिन उन्होंने कहा, “जो बातें मनुष्यों के लिए असंभव हैं, वे परमेश्वर के लिए संभव हैं।” (लूका 18:24-27)

²² “हमें बहुत सी कठिनाइयों से गुजरकर ही परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।” (प्रेरितों के काम 14:22)

³ हे भाइयों, हम तुम्हारे लिए सदा परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि यह उचित है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास अत्यंत बढ़ता जा रहा है, और तुम सब एक दूसरे के प्रति प्रेम से परिपूर्ण हो रहे हो। इसलिए हम परमेश्वर की कलीसियाओं के बीच आपकी उस धीरज और विश्वास के लिए गर्व करते हैं, जो आपने उन सभी उत्पीड़न और कष्टों में दिखाया जिन्हें आपने सहा। ⁵ जो परमेश्वर के धर्मी न्याय का प्रत्यक्ष प्रमाण है, कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य गिने जाओ, जिसके लिए तुम भी दुख सहते हो; ⁶ क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में यह उचित है कि जो लोग तुम्हें सताते हैं, उन्हें वह कष्ट देकर प्रतिफल दे। ⁷ और जब प्रभु यीशु अपने सामर्थ्यवान स्वर्गदूतों के साथ स्वर्ग से प्रकट होंगे, तब हम तुम्हें, जो व्याकुल हो, हमारे साथ विश्राम प्रदान करेंगे। (2 थिस्सलुनीकियों 1:3-7)

इस समय की कठिनाइयों के कारण, इस युग में केवल कुछ ही लोगों को बुलाया और चुना जा रहा है ताकि वे इसका हिस्सा बन सकें (मती 22:1-14; यूहन्ना 6:44;

इब्रानियों 6:4-6)। अन्य लोगों को बाद में बुलाया जाएगा, जैसा कि बाइबल दिखाती है कि “जो लोग मन में भटक गए थे, वे समझ पाएंगे, और जो शिकायत करते थे, वे शिक्षा सीखेंगे” (यशायाह 29:24)।

प्रेरित पतरस ने सिखाया कि राज्य शाश्वत है, और परमेश्वर के सुसमाचार का लगन से पालन किया जाना चाहिए अन्यथा न्याय होगा।

¹⁰ इसलिए, हे भाइयों, अपने बुलावे और चुनाव को और भी अधिक दृढ़ बनाने के लिए और भी अधिक परिश्रम करो, क्योंकि यदि तुम ये काम करोगे तो तुम कभी ठोकर नहीं खाओगे; ¹¹ क्योंकि इस प्रकार हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में तुम्हारे लिए भरपूर प्रवेश का द्वार खुल जाएगा। (2 पतरस 1:10-11)

¹⁷ अब समय आ गया है कि परमेश्वर के घर से न्याय शुरू हो; और यदि यह न्याय सबसे पहले हम पर शुरू होता है, तो उन लोगों का क्या होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार का पालन नहीं करते? (1 पतरस 4:17)

बाइबल की अंतिम पुस्तकें और राज्य

बाइबल सिखाती है कि “परमेश्वर प्रेम है” (1 यूहन्ना 4:8,16) और यीशु परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1,14)—परमेश्वर के राज्य में एक ऐसा राजा होगा जो प्रेम है और जिसके नियम प्रेम का समर्थन करते हैं, न कि घृणा का (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 22:14-15)।

बाइबल यह भी दर्शाती है कि परमेश्वर एक स्वर्गदूत को भेजेगा जो परमेश्वर के राज्य के अनन्त सुसमाचार की घोषणा करेगा (प्रकाशितवाक्य 14:6-7) और फिर एक अन्य स्वर्गदूत को भेजेगा जो यह बताएगा कि महान प्रतीत होने के बावजूद, बाबुल का पतन होगा (प्रकाशितवाक्य 14:8-9)। ये संदेश उस सुसमाचार की अलौकिक पुष्टि होंगे जिसे संसार ने पहले ही साक्षी के रूप में प्राप्त कर लिया होगा और अंत में परमेश्वर के पास आने वाले “महान जनसमूह” के लिए कारण प्रतीत होंगे

(प्रकाशितवाक्य 7:9-14)। बाबुल की अंतिम शक्ति के विपरीत जो उठेगी और गिरेगी (प्रकाशितवाक्य 18:1-18 देखें), परमेश्वर के राज्य का अंतिम चरण सदा बना रहेगा।

¹⁵ फिर सातवें स्वर्गदूत ने तुरही बजाई: और स्वर्ग में ऊँची आवाज़ें सुनाई दीं, “इस संसार के राज्य हमारे प्रभु और उनके मसीह के राज्य हो गए हैं, और वह सदा-सर्वदा राज्य करेगा!” (प्रकाशितवाक्य 11:15)

यीशु राज्य में राज करेंगे! और बाइबल उनके दो पदनामों को प्रकट करती है:

¹⁶ और उसके वस्त्र और उसकी जांघ पर एक नाम लिखा है: राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु। (प्रकाशितवाक्य 19:16)

लेकिन क्या केवल यीशु ही शासन करेंगे? इस अंश पर ध्यान दें:

⁴ और मैंने सिंहासन देखे, और वे उन पर बैठे, और न्याय करने का अधिकार उन्हें सौंपा गया। फिर मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा, जिसके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के लिए काट दिए गए थे, जिन्होंने न तो उस जानवर की पूजा की थी और न ही उसकी मूर्ति की, और न ही अपने माथे या हाथों पर उसका चिन्ह लिया था। और वे जीवित रहे और मसीह के साथ एक हजार वर्ष तक राज्य किया...⁶ धन्य और पवित्र है वह जो प्रथम पुनरुत्थान में भाग लेगा। ऐसे लोगों पर दूसरी मृत्यु का कोई अधिकार नहीं होगा, परन्तु वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 20:4,6)

सच्चे मसीही पुनर्जीवित होकर मसीह के साथ एक हजार वर्षों तक राज्य करेंगे! राज्य सदा बना रहेगा (प्रकाशितवाक्य 11:15), लेकिन प्रकाशितवाक्य 20:6 में वर्णित पहले पुनर्जीवित संतों का राज्य केवल एक हजार वर्षों के लिए था। इसीलिए मैंने पहले इस राज्य का पहला चरण कहा था—भौतिक, सहस्राब्दी चरण, जो अंतिम, अधिक आध्यात्मिक चरण से भिन्न है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कई घटनाओं का उल्लेख है जो परमेश्वर के राज्य के सहस्राब्दी चरण और अंतिम चरण के बीच घटित होती हैं:

⁷ अब जब हजार वर्ष पूरे हो चुके हैं, तो शैतान अपने कैद से रिहा हो जाएगा।
⁸ और वे पृथ्वी के चारों कोनों में बसे राष्ट्रों, गोग और मागोग को धोखा देने के लिए निकलेंगे, ताकि उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा करें, जिनकी संख्या समुद्र की रेत के समान है। ¹¹ फिर मैंने एक महान श्वेत सिंहासन और उस पर बैठे हुए को देखा, जिसके चेहरे से पृथ्वी और आकाश दोनों भाग गए। उनके लिए वहाँ कोई स्थान नहीं बचा। ¹² और मैंने मरे हुआँ को, छोटे-बड़े, परमेश्वर के सामने खड़े देखा, और पुस्तकें खोली गईं। फिर एक और पुस्तक खोली गई, जो जीवन की पुस्तक थी। और मरे हुआँ का न्याय उनके कर्मों के अनुसार, उन बातों के आधार पर किया गया जो पुस्तकों में लिखी थीं।
¹³ समुद्र ने अपने भीतर के मृतकों को उगल दिया, और मृत्यु और पाताल ने अपने भीतर के मृतकों को सौंप दिया। और उनका न्याय उनके कर्मों के अनुसार किया गया। ¹⁴ फिर मृत्यु और पाताल को अग्नि की झील में फेंक दिया गया। यह दूसरी मृत्यु है। ¹⁵ और जिसका नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखा पाया गया, उसे आग की झील में डाल दिया गया।
(प्रकाशितवाक्य 20:7-8, 11-15)

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक दर्शाती है कि राज्य का एक बाद का चरण होगा जो हजार वर्ष के शासन के बाद और उन लोगों की दूसरी मृत्यु के बाद आएगा जो पश्चाताप और ईश्वर के मार्गों को स्थायी रूप से अस्वीकार करते हैं:

¹ अब मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी, क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली पृथ्वी नष्ट हो चुके थे। और वहाँ समुद्र भी नहीं था। ² तब मैंने, यूहन्ना ने, पवित्र नगर, नया यरूशलेम, को परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे आते हुए देखा, जो अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन के समान सजी हुई थी। ³ और मैंने स्वर्ग से एक ऊँची आवाज़ सुनी, “देखो, परमेश्वर का तम्बू मनुष्यों

के साथ है, और वह उनके साथ रहेगा, और वे उसके लोग होंगे। परमेश्वर स्वयं उनके साथ होगा और उनका परमेश्वर होगा।”⁴ और परमेश्वर उनकी आँखों से हर एक आँसू पोंछ देगा; अब न तो मृत्यु होगी, न शोक, न रोना। अब कोई पीड़ा नहीं होगी, क्योंकि पुरानी बातें बीत चुकी हैं।” (प्रकाशितवाक्य 21:1-4)

¹ और उसने मुझे जीवन के जल की एक शुद्ध नदी दिखाई, जो क्रिस्टल की तरह साफ थी, और परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से बह रही थी।² उस सड़क के बीचों बीच और नदी के दोनों किनारों पर जीवन का वृक्ष था, जिस पर बारह फल लगते थे, और प्रत्येक वृक्ष हर महीने एक फल देता था। उस वृक्ष के पत्ते राष्ट्रों के रोगों के उपचार के लिए थे।³ और फिर कोई श्राप नहीं रहेगा, बल्कि परमेश्वर और मेमने का सिंहासन उसमें विराजमान होगा, और उसके सेवक उसकी सेवा करेंगे।⁴ वे उसका चेहरा देखेंगे, और उसका नाम उनके माथे पर अंकित होगा।⁵ वहाँ कभी रात नहीं होगी: उन्हें न तो दीपक की आवश्यकता होगी और न ही सूर्य के प्रकाश की, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें प्रकाश देगा। और वे सदा राज्य करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:1-5)

ध्यान दें कि यह शासनकाल, जो कि बाद हजार वर्षों का यह काल, जिसमें परमेश्वर के सेवक भी शामिल हैं, अनंत काल तक चलेगा। स्वर्ग में तैयार किया गया पवित्र नगर स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आएगा। यह परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण का आरंभ है। एक ऐसा समय जब कोई पीड़ा या कष्ट नहीं रहेगा!

नम्र लोग पृथ्वी (मत्ती 5:5) और सब कुछ (प्रकाशितवाक्य 21:7) के वारिस होंगे। पृथ्वी, जिसमें उस पर बसा पवित्र नगर भी शामिल है, बेहतर होगा क्योंकि परमेश्वर के मार्ग अपनाए जाएंगे। यह समझें कि:

⁷ उनके शासन और शांति की वृद्धि का कोई अंत नहीं होगा, (यशायाह 9:7)

स्पष्ट है कि परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण के प्रारंभ होने के बाद विकास होगा क्योंकि सभी लोग परमेश्वर के शासन का पालन करेंगे।

यह एक अत्यंत गौरवशाली समय होगा:

⁹ लेकिन जैसा कि लिखा है: “आँख ने नहीं देखा, न कानों ने सुना, और न ही मनुष्य के हृदय में वे बातें आई हैं जो परमेश्वर ने उन लोगों के लिए तैयार की हैं जो उससे प्रेम करते हैं।” ¹⁰ लेकिन परमेश्वर ने उन्हें अपनी आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया है। (1 कुरिन्थियों 2:9-10)

यह प्रेम, आनंद और शाश्वत सुकून का समय है। यह एक अद्भुत समय होगा! परमेश्वर का राज्य अनंत काल को और भी बेहतर बनाएगा। क्या आप इसमें अपना योगदान नहीं देना चाहते?

5. नए नियम के बाहर के स्रोतों ने सिखाया परमेश्वर का राज्य।

क्या ईसा मसीह के प्रारंभिक अनुयायियों का मानना था कि उन्हें ईश्वर के एक वास्तविक राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए?

हाँ।

कई साल पहले, उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बार्ट एहरमन ने अपने व्याख्यान में बार-बार और सही तरीके से यह जोर दिया कि आज के अधिकांश ईसाई होने का दावा करने वालों के विपरीत, यीशु और उनके शुरुआती अनुयायियों ने परमेश्वर के राज्य की घोषणा की थी। डॉ. एहरमन की ईसाई धर्म की समग्र समझ कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड से बहुत भिन्न है, लेकिन हम इस बात से सहमत हैं कि राज्य का सुसमाचार वही है जिसका स्वयं यीशु ने प्रचार किया और उनके अनुयायियों ने उस पर विश्वास किया। हम इस बात से भी सहमत हैं कि आज जो लोग ईसाई होने का दावा करते हैं, उनमें से कई इसे समझते नहीं हैं।

नए नियम के बाद का सबसे पुराना संरक्षित लेखन और उपदेश

ईश्वर का राज्य उस ग्रंथ का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था जिसे "सबसे पुराना संपूर्ण ईसाई उपदेश माना जाता है जो आज तक जीवित है" (Holmes M.W. Ancient Christian Sermon. The Apostolic Fathers: Greek Texts and English Translations, 2nd ed. Baker Books, Grand Rapids, 2004, p. 102)। प्राचीन ईसाई उपदेश इसमें राज्य के बारे में ये कथन शामिल हैं:

^{5:5} इसके अलावा, भाइयों, आप जानते हैं कि इस शारीरिक संसार में हमारा रहना तुच्छ और क्षणभंगुर है, परन्तु मसीह का वादा महान और अद्भुत है: आने वाले राज्य में विश्राम और अनन्त जीवन।

उपरोक्त कथन से पता चलता है कि राज्य अभी नहीं है, बल्कि आएगा और शाश्वत होगा। इसके अलावा, यह प्राचीन उपदेश कहता है:

6:9 अब यदि इन जैसे धर्मी पुरुष भी अपने धार्मिक कर्मों से अपने बच्चों को नहीं बचा सकते, तो यदि हम अपने बपतिस्मा को शुद्ध और पवित्र न रखें, तो हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का क्या आश्वासन है? या यदि हमारे कर्म पवित्र और धर्मी नहीं पाए गए, तो हमारा हिमायती कौन होगा?

9:6 इसलिए आओ हम एक दूसरे से प्रेम करें, ताकि हम सब परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकें। 11:7 इसलिए, यदि हम जानते हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में क्या सही है, तो हम उसके राज्य में प्रवेश करेंगे और उन प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करेंगे जिन्हें “कानों ने नहीं सुना, न आँखों ने देखा और न ही मनुष्य के हृदय ने कल्पना की है।”

12:1 इसलिए, प्रेम और धार्मिकता के साथ पल-पल परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा करते रहें, क्योंकि हम परमेश्वर के प्रकट होने का दिन नहीं जानते।

12:6 वह कहता है, मेरे पिता का राज्य आएगा।

उपरोक्त कथन दर्शाते हैं कि उचित जीवन शैली के माध्यम से प्रेम की आवश्यकता है, कि हम अभी तक परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाए हैं, और यह परमेश्वर के प्रकट होने के दिन के बाद ही प्राप्त होगा—अर्थात् यीशु के पुनः आने के बाद। यह पिता का राज्य है और यह राज्य केवल यीशु ही नहीं है।

यह रोचक है कि ईश्वर द्वारा संरक्षित सबसे पुराना ईसाई उपदेश भी उसी ईश्वर के राज्य की शिक्षा देता है जिसकी शिक्षा नए नियम में दी गई है। सतत चर्च ऑफ गॉड नाउ टीचस (यह संभव है कि यह किसी वास्तविक चर्च ऑफ गॉड से हो, लेकिन ग्रीक भाषा के मेरे सीमित ज्ञान के कारण मैं इस बारे में और अधिक पुख्ता बयान नहीं दे सकता)।

दूसरी शताब्दी के चर्च नेता और राज्य का सुसमाचार

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि शुरुआती दूसरी सदी में, पापियास, जो जॉन के श्रोता और पॉलीकार्प के मित्र थे और जिन्हें रोमन कैथोलिकों द्वारा संत माना जाता है, ने सहस्राब्दि राज्य की शिक्षा दी। यूसिबियस ने दर्ज किया कि पापियास ने सिखाया:

... मृतकों में से जी उठने के बाद एक सहस्राब्दी होगी, जब इस पृथ्वी पर मसीह का व्यक्तिगत शासन स्थापित होगा। (Fragments of Papias, VI. See also Eusebius, Church History, Book 3, XXXIX, 12)

पापियास ने सिखाया कि यह अत्यधिक समृद्धि का समय होगा:

इसी प्रकार, [उन्होंने कहा] कि गेहूं का एक दाना दस पैदावार देगा

हजार बालियाँ होंगी, और प्रत्येक बाली में दस हजार दाने होंगे, और प्रत्येक दाने से दस पौंड शुद्ध, उत्तम आटा निकलेगा; और सेब, बीज और घास भी लगभग समान अनुपात में पैदावार देंगे; और सभी जानवर, केवल पृथ्वी की उपज पर ही निर्भर होकर, शांतिप्रिय और सामंजस्यपूर्ण हो जाएंगे, और मनुष्य के पूर्ण अधीन हो जाएंगे।" [इन बातों की गवाही प्राचीन पापियास ने अपनी पुस्तक के चौथे भाग में दी है, जो जॉन के शिष्य और पॉलीकार्प के मित्र थे; उन्होंने पाँच पुस्तकें लिखी थी...] (Fragments of Papias, IV)

नए नियम के बाद कुरिन्थियों को पत्र राज्यों:

^{42:1-3} प्रेरितों ने प्रभु यीशु मसीह से हमारे लिए सुसमाचार प्राप्त किया; यीशु मसीह को परमेश्वर ने भेजा था। अतः मसीह परमेश्वर से हैं, और प्रेरित भी मसीह से हैं। इसलिए दोनों परमेश्वर की इच्छा से नियत क्रम में आए। अतः उन्हें यह दायित्व सौंपा गया, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा उन्हें पूर्ण विश्वास दिलाया गया, और पवित्र आत्मा के पूर्ण आश्वासन से परमेश्वर के वचन में पुष्ट किया गया, और वे परमेश्वर के राज्य के आने का शुभ समाचार लेकर निकले।

स्मिरना के पॉलीकार्प प्रारंभिक ईसाई नेता और जॉन के शिष्य थे। जॉन मूल प्रेरितों में से अंतिम थे जिनकी मृत्यु हुई। पॉलीकार्प (लगभग 120-135 ई.स.) ने शिक्षा दी:

धन्य हैं वे गरीब, और वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि परमेश्वर का राज्य उन्हीं का है। (Polycarp. Letter to the Philippians, Chapter II. From Ante-Nicene Fathers, Volume 1 as edited by Alexander Roberts & James Donaldson. American Edition, 1885)

यह जानते हुए कि “परमेश्वर का उपहास नहीं किया जा सकता,” हमें उसकी आज्ञा और महिमा के योग्य आचरण करना चाहिए... क्योंकि यह अच्छा है कि वे संसार की वासनाओं से दूर रहें, क्योंकि “हर वासना आत्मा के विरुद्ध युद्ध करती है;” और “न तो व्यभिचारी, न ही नपुंसक, न ही मनुष्यों के साथ दुराचार करने वाले परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी होंगे,” और न ही वे जो असंगत और अशोभनीय कार्य करते हैं। (वह, अध्याय V)

इसलिए, आइए हम भय और पूर्ण आदर के साथ उसकी सेवा करें, जैसा कि उसने स्वयं हमें आज्ञा दी है, और जैसा कि उन प्रेरितों ने किया जिन्होंने हमें सुसमाचार सुनाया, और उन भविष्यवक्ताओं ने किया जिन्होंने प्रभु के आगमन की पूर्वसूचना की। (वही, अध्याय VI)

नए नियम के अन्य लोगों की तरह, पॉलीकार्प ने सिखाया कि धर्मी लोग, न कि आज्ञा तोड़ने वाले, परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी होंगे।

यह भी दावा किया जाता है कि पॉलीकार्प ने निम्नलिखित बातें सिखाई थीं:

और अगले सब्त के दिन उन्होंने कहा, 'हे परमेश्वर के प्रिय बच्चों, मेरी इस विनती को सुनो। जब बिशप उपस्थित थे, तब मैंने तुम्हें शपथ दिलाई थी, और अब मैं तुम सभी से फिर से आग्रह करता हूँ कि प्रभु के मार्ग पर शालीनता और योग्यता से चलो... देखो, और फिर तैयार रहो, अपने हृदयों को बोझिल न होने दो। एक दूसरे के प्रति प्रेम के विषय में नई आज्ञा, उनका

अचानक बिजली की तरह प्रकट होना, अग्नि द्वारा महान न्याय, अनन्त जीवन, उनका अमर राज्य। और जो कुछ भी तुम परमेश्वर से सीखकर जानते हो, जब तुम प्रेरित शास्त्रों का अध्ययन करो, तो पवित्र आत्मा की कलम से उन्हें अपने हृदयों पर अंकित कर लो, ताकि आज़ाएँ तुम में अमित रूप से बनी रहें।' (Life of Polycarp, Chapter 24. J. B. Lightfoot, The Apostolic Fathers, vol. 3.2, 1889, pp. 488-506)

लगभग 170 ई. में चर्च ऑफ गॉड के नेता मेलिटो ऑफ सार्डिस ने निम्नलिखित शिक्षाएं दीं:

क्योंकि वास्तव में व्यवस्था सुसमाचार से उत्पन्न हुई—पुरानी व्यवस्था नई व्यवस्था से, दोनों सियोन और यरूशलेम से एक साथ निकलीं; और आज़ा अनुग्रह से उत्पन्न हुई, और प्रतीक पूर्ण उत्पाद में, और मेमना पुत्र में, और भेड़ मनुष्य में, और मनुष्य परमेश्वर में...

लेकिन सुसमाचार कानून और उसके स्पष्टीकरण का माध्यम बन गया।

पूर्ति हुई, जबकि चर्च सत्य का भंडार बन गया...

यही वह है जिसने हमें गुलामी से मुक्ति, अंधकार से प्रकाश, मृत्यु से जीवन और अत्याचार से अनन्त राज्य में पहुंचाया। (Melito. Homily On the Passover. Verses 7,40, 68. Translation from Kerux: The Journal of Online Theology. <http://www.kerux.com/documents/KeruxV4N1A1.asp>)

इस प्रकार, परमेश्वर का राज्य एक शाश्वत वस्तु के रूप में जाना जाता था, न कि केवल वर्तमान ईसाई या रोमन कैथोलिक चर्च के रूप में, और इसमें परमेश्वर का नियम भी शामिल था।

दूसरी शताब्दी के मध्य से अंत तक के एक अन्य लेख में लोगों को ईश्वर के राज्य की ओर देखने के लिए प्रेरित किया गया है:

अतः तुममें से कोई भी अब छल न करे और न ही पीछे मुड़कर देखे, बल्कि स्वेच्छा से परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार की ओर अग्रसर हो। (Roman Clement. Recognitions, Book X, Chapter XLV. Excerpted from Ante-Nicene Fathers, Volume 8. Edited by Alexander Roberts & James Donaldson. American Edition, 1886)

इसके अलावा, हालांकि यह स्पष्ट रूप से सच्चे चर्च के किसी सदस्य द्वारा नहीं लिखा गया था, दूसरी शताब्दी के मध्य में लिखे गए इस लेख का शीर्षक है हेर्मास का चरवाहा रॉबर्ट्स और डोनाल्डसन द्वारा किए गए अनुवाद में "ईश्वर का राज्य" अभिव्यक्ति का प्रयोग चौदह बार किया गया है।

दूसरी शताब्दी में सच्चे ईसाई, और यहां तक कि वे लोग भी जो केवल मसीह में विश्वास करने का दावा करते थे, परमेश्वर के राज्य के बारे में कुछ न कुछ जानते थे।

रोमन कैथोलिक और पूर्वी ऑर्थोडॉक्स संत इरेनियस भी यह समझते थे कि पुनरुत्थान के बाद ईसाई ईश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे। ध्यान दीजिए उन्होंने लगभग 180 ई. में क्या लिखा था:

क्योंकि विश्वासियों की यही स्थिति है, क्योंकि उनमें पवित्र आत्मा निरंतर निवास करता है, जो उसने बपतिस्मा में दिया था, और जो ग्रहणकर्ता के पास तब तक बना रहता है, जब तक वह सत्य, पवित्रता, धार्मिकता और धैर्य के मार्ग पर चलता है। क्योंकि विश्वासियों में इस आत्मा का पुनरुत्थान होता है, शरीर आत्मा को पुनः ग्रहण करता है, और उसके साथ, पवित्र आत्मा की शक्ति से, उठाया जाता है और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करता है। (Irenaeus, St., Bishop of Lyon. Translated from the Armenian by Armitage Robinson. The Demonstration of the Apostolic Preaching, Chapter 42. Wells, Somerset, Oct. 1879. As published in SOCIETY FOR PROMOTING CHRISTIAN KNOWLEDGE. NEW YORK: THE MACMILLAN CO, 1920)

एंटीओक के थियोफिलस ने सिखाया:

में तो बस उसकी भलाई का जिक्र करता हूँ; अगर मैं उसे राज्य कहता हूँ, तो मैं बस उसकी महिमा का जिक्र करता हूँ... क्योंकि अगर उसने उसे शुरुआत से ही अमर बना दिया होता, तो वह उसे ईश्वर बना देता। ... इसलिए, उसने उसे न तो अमर बनाया और न ही नश्वर, बल्कि जैसा कि हमने ऊपर कहा है, दोनों के योग्य बनाया; कि अगर वह अमरता की ओर झुकाव रखे और ईश्वर की आज्ञा का पालन करे, तो उसे ईश्वर से अमरता पुरस्कार के रूप में प्राप्त हो और वह ईश्वर बन जाए। (Theophilus, To Autolytus, 1:3, 2:27)

रोमन कैथोलिक संत हिप्पोलिटस ने तीसरी शताब्दी के आरंभ में लिखा था:

और तुम स्वर्ग के राज्य को पाओगे, तुम जिन्होंने इस जीवन में रहते हुए स्वर्गीय राजा को जाना। और तुम ईश्वर के साथी और मसीह के सह-उत्तराधिकारी बनोगे, अब वासनाओं या अभिलाषाओं के गुलाम नहीं रहोगे, और फिर कभी रोगों से क्षीण नहीं होगे। क्योंकि तुम ईश्वर बन चुके हो: मनुष्य रहते हुए तुमने जो भी कष्ट सहे, वे ईश्वर ने तुम्हें दिए, क्योंकि तुम नश्वर थे, परन्तु जो कुछ भी ईश्वर के लिए उचित है, वह ईश्वर ने तुम्हें देने का वादा किया है, क्योंकि तुम देवत्व प्राप्त कर चुके हो और अमरता के लिए उत्पन्न हुए हो। (Hippolytus. Refutation of All Heresies, Book X, Chapter 30)

मनुष्य का लक्ष्य ईश्वर के आने वाले राज्य में देवत्व प्राप्त करना है (ईश्वर के वास्तविक बच्चों के रूप में, देखें भजन 82:6)।

ईश्वर के आने का राज्य मूल कैथोलिक चर्च की एक शिक्षा थी (हमारी निःशुल्क ईबुक भी देखें, जो ccog.org पर उपलब्ध है, जिसका शीर्षक है [मूल कैथोलिक चर्च की मान्यताएँ: क्या शेष बचे समूह में निरंतर प्रेरितिक उत्तराधिकार हो सकता है?](#)).

दूसरी और तीसरी शताब्दी की समस्याएं

राज्य की व्यापक स्वीकृति के बावजूद, दूसरी शताब्दी में मार्शियन नामक एक धर्मत्यागी नेता का उदय हुआ। मार्शियन ने ईश्वर के नियम, सब्त के दिन और ईश्वर के वास्तविक राज्य के विरुद्ध शिक्षा दी। हालांकि पॉलीकार्प और अन्य लोगों ने उसकी निंदा की, फिर भी उसका रोम के चर्च से काफी समय तक संपर्क रहा और ऐसा प्रतीत होता है कि रोमन चर्च पर उसका काफी प्रभाव था।

दूसरी और तीसरी शताब्दी में, अलेक्जेंड्रिया (मिस्र) में रूपकवादी विचारधारा स्थापित हो रही थी। कई रूपकवादी ईश्वर के शाब्दिक राज्य के सिद्धांत का विरोध करते थे। इनमें से कुछ रूपकवादियों के बारे में रिपोर्ट पर ध्यान दें:

डायोनिसियस का जन्म अलेक्जेंड्रिया के एक कुलीन और धनी मूर्तिपूजक परिवार में हुआ था और उन्होंने वहां के दर्शनशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने मूर्तिपूजक शिक्षा संस्थानों को छोड़कर ओरिजन का शिष्य बनने का निर्णय लिया और बाद में अलेक्जेंड्रिया के धार्मिक शिक्षा विद्यालय का कार्यभार संभाला।

क्लेमेंट, ओरिजन और ग्नोस्टिक विचारधारा के अनुयायी अपनी मनगढ़ंत और प्रतीकात्मक व्याख्याओं से पवित्र ग्रंथों के सिद्धांतों को विकृत कर रहे थे... उन्होंने स्वयं को “रूपकवादी” का नाम दिया। नेपोस ने सार्वजनिक रूप से रूपकवादियों का विरोध किया और यह दावा किया कि पृथ्वी पर मसीह का शासन होगा...

डायोनिसियस ने नेपोस के अनुयायियों के साथ वाद-विवाद किया, और उनके अनुसार... “ईश्वर के राज्य में अब जैसी स्थिति है वैसी ही स्थिति थी।” चर्चों की वर्तमान स्थिति में ईश्वर के राज्य के अस्तित्व का यह पहला उल्लेख है...

नेपोस ने उनकी गलती को सुधारते हुए यह दिखाया कि स्वर्ग का राज्य प्रतीकात्मक नहीं है, बल्कि पुनरुत्थान के माध्यम से शाश्वत जीवन में हमारे प्रभु का वास्तविक आगमन है...

अतः, वर्तमान परिस्थितियों में ईश्वर के राज्य की अवधारणा मिस्र में स्थित ग्नोस्टिक विचारधारा के रूपकवादी संप्रदाय में, 200 से 250 ईस्वी के बीच, उत्पन्न हुई और सामने आई, जो साम्राज्य के बिशपों को सिंहासन का आकांक्षी माने जाने से पूरे एक शताब्दी पहले की बात है।

क्लेमेंट ने ईश्वर के राज्य की अवधारणा को ईश्वर के सच्चे मानसिक ज्ञान की अवस्था के रूप में प्रस्तुत किया। ओरिजन ने इसे धर्मग्रंथों के स्पष्ट शब्दों में छिपे आध्यात्मिक अर्थ के रूप में समझाया। (Ward, Henry Dana. *The Gospel of the Kingdom: A Kingdom Not of this World; Not in this World; But to Come in the Heavenly Country, of the Resurrection from the Dead and of the Restitution of All Things.* Published by Claxton, Remsen & Haffelfinger, 1870, pp. 124-125)

इस प्रकार, जहाँ बिशप नेपोस परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे, वहीं रूपकवादियों ने इसकी एक झूठी, कम शाब्दिक व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया। लगभग उसी समय, हीरापोलिस के बिशप अपोलिनारिस ने भी रूपकवादियों की त्रुटियों का खंडन करने का प्रयास किया। इतिहास भर, परमेश्वर के सच्चे गिरजाघर के अनुयायी परमेश्वर के राज्य की शाब्दिक सत्यता के लिए खड़े रहे।

हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्मस्ट्रांग ने राज्य के सुसमाचार का शिक्षण किया, साथ ही

20वीं सदी में, चर्च ऑफ गॉड (प्रकाशितवाक्य 3:7-13) के आधुनिक फिलाडेल्फियाई युग के पहले नेता, स्वर्गीय हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्मस्ट्रांग ने लिखा:

क्योंकि वे अस्वीकार कर दिया ईसा मसीह के सुसमाचार के बाद, दुनिया को उसकी जगह कुछ और लाना पड़ा। उन्हें एक नई चीज का आविष्कार करना पड़ा। नकली! इसलिए हमने परमेश्वर के राज्य को महज एक मीठी-

मीठी बात—मनुष्यों के दिलों में बसी एक सुखद भावना—के रूप में सुना है, जो इसे एक अमूर्त, अवास्तविक शून्यता तक सीमित कर देता है! कुछ लोगों ने इसे गलत तरीके से पेश किया है कि “चर्च” ही राज्य है... ईसा मसीह से 600 वर्ष पूर्व रहने वाले नबी डेनियल जानते थे कि परमेश्वर का राज्य एक वास्तविक राज्य था—एक ऐसी सरकार जो पृथ्वी पर वास्तविक लोगों पर शासन करती थी...

यहां परमेश्वर ने अपने राज्य की व्याख्या इस प्रकार की है: “और इन राजाओं के दिनों में...”—यहाँ दस उंगलियों की बात हो रही है, जिनमें से कुछ लोहे की और कुछ भंगुर मिट्टी की हैं। दानिएल 7 और प्रकाशितवाक्य 13 और 17 से इस भविष्यवाणी को जोड़कर, यह नए संयुक्त यूरोपीय राज्य की ओर इशारा कर रहा है जो अब आपकी आँखों के सामने बन रहा है! प्रकाशितवाक्य 17:12 में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यह दस राजाओं या राज्यों का संघ होगा जो (प्रकाशितवाक्य 17:8) पुराने रोमन साम्राज्य को पुनर्जीवित करेगा...

जब मसीह आएंगे, तो वे राजाओं के राजा के रूप में आएंगे, जो पूरी पृथ्वी पर शासन करेंगे (प्रकाशितवाक्य 19:11-16); और उनका राज्य-- परमेश्वर का राज्य डेनियल ने कहा, “इसका उद्देश्य इन सभी सांसारिक राज्यों का नाश करना है।” प्रकाशितवाक्य 11:15 में उसने इन शब्दों में कहा गया है: “इस संसार के राज्य बन रहे हैं हमारे प्रभु और उनके मसीह का राज्य: और वह सदा-सर्वदा राज्य करेगा!” यही परमेश्वर का राज्य है। यह वर्तमान सरकार का अंत है—हाँ, यहाँ तक कि संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन का भी। तब वे प्रभु यीशु मसीह के राज्य—उनकी सरकारें—बन जाएँगी, जो समस्त पृथ्वी पर राजाओं के राजा होंगे। इससे यह तथ्य पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर का राज्य एक वास्तविक सरकार है। जिस प्रकार कसदियों का साम्राज्य एक राज्य था—जिस प्रकार रोमन साम्राज्य एक राज्य था—उसी प्रकार परमेश्वर का राज्य एक सरकार है। यह संसार के

राष्ट्रों की सरकार पर अधिकार करने के लिए है। यीशु मसीह एक राजा— एक शासक—बनने के लिए पैदा हुए थे!

वही यीशु मसीह, जो 1900 वर्ष से भी अधिक समय पहले पवित्र भूमि की पहाड़ियों और घाटियों तथा यरूशलेम की सड़कों पर विचरण करते थे, पुनः आ रहे हैं। उन्होंने कहा था कि वे पुनः आएंगे। क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद, परमेश्वर ने उन्हें तीन दिन और तीन रातों के बाद मृतकों में से जिलाया (मती 12:40; प्रेरितों के कार्य 2:32; 1 कुरिन्थियों 15:3-4)। वे परमेश्वर के सिंहासन पर आरोहण कर गए, जो ब्रह्मांड के शासन का मुख्यालय है (प्रेरितों के कार्य 1:9-11; इब्रानियों 1:3; 8:1; 10:12; प्रकाशितवाक्य 3:21)।

वह दृष्टांत का “कुलीन व्यक्ति” है, जो परमेश्वर के सिंहासन—“दूर देश”—में सभी राष्ट्रों के राजाओं के राजा के रूप में ताजपोशी के लिए गया, और फिर पृथ्वी पर लौट आया (लूका 19:12-27)।

फिर से, वह “सभी चीजों की बहाली के समय” तक स्वर्ग में है (प्रेरितों के काम 3:19-21)। बहाली इसका अर्थ है किसी पूर्व स्थिति या अवस्था में वापसी करना। इस मामले में, इसका अर्थ है पृथ्वी पर ईश्वर के शासन की बहाली, और इस प्रकार, विश्व शांति और आदर्श परिस्थितियों की बहाली।

वर्तमान विश्व उथल-पुथल, बढ़ते युद्ध और विवाद एक ऐसी भयंकर संकट में परिणत होंगे कि, जब तक परमेश्वर हस्तक्षेप न करे, कोई भी मनुष्य जीवित नहीं बचेगा (मती 24:22)। जब यह संकट अपने चरम पर होगा और विलंब के परिणामस्वरूप इस ग्रह से समस्त जीवन का नाश हो जाएगा, तब यीशु मसीह लौटेंगे। इस बार वे दिव्य परमेश्वर के रूप में आ रहे हैं। वे ब्रह्मांड पर शासन करने वाले सृष्टिकर्ता की समस्त शक्ति और महिमा के साथ आ रहे हैं (मती 24:30; 25:31)। वे “राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु” (प्रकाशितवाक्य 19:16) के रूप में आ रहे हैं, ताकि विश्वव्यापी सर्वोच्च

सरकार की स्थापना करें और सभी राष्ट्रों पर “लोहे के दंड से” शासन करें (प्रकाशितवाक्य 19:15; 12:5)।

क्या ईसा मसीह का स्वागत नहीं है?

लेकिन क्या मानवता खुशी से झूम उठेगी और उन्मादपूर्ण उत्साह और उमंग में उसका स्वागत करेगी—क्या पारंपरिक ईसाई धर्म के चर्च भी ऐसा करेंगे?

वे ऐसा नहीं करेंगे! वे विश्वास करेंगे, क्योंकि शैतान के झूठे सेवकों (2 कुरिन्थियों 11:13-15) ने उन्हें धोखा दिया है, कि वह मसीह-विरोधी है। कलीसियाएँ और राष्ट्र उसके आने पर क्रोधित होंगे (प्रकाशितवाक्य 11:15 और 11:18), और सैन्य बल वास्तव में उससे लड़ने और उसे नष्ट करने का प्रयास करेंगे (प्रकाशितवाक्य 17:14)!

आने वाले तीसरे विश्व युद्ध के निर्णायक युद्ध में राष्ट्र यरूशलेम में भिड़ेंगे (जकर्याह 14:1-2), और फिर मसीह लौटेंगे। अलौकिक शक्ति से वे उन राष्ट्रों से लड़ेंगे जो उनके विरुद्ध लड़ते हैं (पद 3)। वे उन्हें पूर्णतः पराजित करेंगे (प्रकाशितवाक्य 17:14)। “उस दिन उनके पैर जैतून पर्वत पर करेंगे,” जो यरूशलेम के पूर्व में थोड़ी ही दूरी पर स्थित है (जकर्याह 14:4)। (Armstrong HW. The Mystery of the Ages, 1984)

बाइबल घोषणा करती है कि यीशु लौटेंगे और विजयी होंगे, फिर भी उनके लौटने पर बहुत से लोग उनका विरोध करेंगे (प्रकाशितवाक्य 19:19)। बहुत से लोग (बाइबल की भविष्यवाणी की गलतफहमी के आधार पर, लेकिन आंशिक रूप से झूठे भविष्यवक्ताओं और रहस्यवादियों के कारण) दावा करेंगे कि लौटने वाले यीशु ही अंतिम मसीह-विरोधी हैं!

निम्नलिखित जानकारी भी हर्बर्ट आर्मस्ट्रांग की ओर से है:

सच्चा धर्म—पवित्र आत्मा द्वारा प्रदत्त ईश्वर के प्रेम से सशक्त ईश्वर का सत्य...ईश्वर और यीशु मसीह को जानने का, सत्य को जानने का, और ईश्वर के दिव्य प्रेम की गर्माहट का अवर्णनीय आनंद!

ईश्वर के सच्चे चर्च की शिक्षाएं बस पवित्र बाइबल के “हर एक शब्द के अनुसार जीवन जीने” की हैं...

मनुष्य को पाने के मार्ग से हटकर देने के मार्ग की ओर मुड़ना चाहिए—जो कि ईश्वर का प्रेम का मार्ग है।

अब एक नई सभ्यता पृथ्वी पर अपना आधिपत्य जमाएगी! (वही)

नई सभ्यता परमेश्वर का राज्य है। यह घोषणा करना कि नई सभ्यता प्रेम पर आधारित होगी, यीशु और उनके अनुयायियों द्वारा सिखाए गए राज्य के सच्चे सुसमाचार का एक प्रमुख हिस्सा है। यही वह बात है जिसे हम कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड प्रचार करते हैं।

हर्बर्ट आर्मस्ट्रांग ने महसूस किया कि यीशु यह सिखा रहे थे कि मानव समाज, भले ही वह आज्ञापालन करना चाहता हो, जीवन के 'त्याग के मार्ग', यानी प्रेम के मार्ग को अस्वीकार कर चुका है। ऐसा प्रतीत होता है कि लगभग कोई भी यीशु की शिक्षा के महत्व को ठीक से नहीं समझ पाया है।

यीशु के माध्यम से मुक्ति सुसमाचार का एक हिस्सा है।

अब तक यहाँ तक पढ़ चुके कुछ लोगों के मन में शायद उद्धार में यीशु की मृत्यु की भूमिका को लेकर जिज्ञासा हो। जी हाँ, उनकी मृत्यु उस सुसमाचार का हिस्सा है जिसके बारे में नए नियम और हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्मस्ट्रांग दोनों ने लिखा है।

नए नियम में दिखाया गया है कि सुसमाचार में यीशु के माध्यम से उद्धार शामिल है:

¹⁶ क्योंकि मैं मसीह के सुसमाचार से लज्जित नहीं हूँ, क्योंकि यह विश्वास करने वाले हर किसी के लिए, पहले यहूदियों के लिए और फिर यूनानियों के लिए भी, उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है (रोमियों 1:16)।

⁴ इसलिए जो लोग तितर-बितर हो गए थे, वे हर जगह जाकर वचन का प्रचार करने लगे। ⁵ फिर फिलिप सामरिया नगर में गया और वहाँ के लोगों को मसीह का उपदेश दिया। ¹² लेकिन जब लोगों ने फिलिप पर विश्वास किया, जब उसने परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम के विषय में प्रचार किया, तो पुरुषों और महिलाओं दोनों ने बपतिस्मा लिया। ²⁵ अतः जब उन्होंने गवाही दी और प्रभु के वचन का प्रचार किया, तो वे यरूशलेम लौट आए और सामरियों के कई गांवों में सुसमाचार का प्रचार करने लगे। ²⁶ फिर प्रभु के एक दूत ने फिलिप से बात की... ⁴⁰ फिलिप अज़ोतुस में मिला। और वहाँ से गुज़रते हुए, वह सभी नगरों में प्रचार करता हुआ कैसरिया पहुँचा। (प्रेरितों के काम 8:4,5,12,25,26,40)

¹⁸ उसने उन्हें यीशु और पुनरुत्थान का उपदेश दिया। (प्रेरितों के काम 17:18)

³⁰ फिर पौलुस दो साल तक अपने किराए के मकान में रहा और जो भी उसके पास आता, वह उनका स्वागत करता था। ³¹ **परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना और प्रभु यीशु मसीह से संबंधित बातों का शिक्षण करना।** उसे पूरा भरोसा था, और कोई उसे मना नहीं कर रहा था। (प्रेरितों के काम 28:30-31)

ध्यान दें कि उपदेश में यीशु और परमेश्वर के राज्य दोनों का उल्लेख था। दुख की बात है कि ग्रीको-रोमन चर्चों की शिक्षाओं में परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार की उचित समझ अक्सर गायब रहती है।

दरअसल, हमें उस राज्य का हिस्सा बनाने में मदद करने के लिए, परमेश्वर ने मनुष्यों से इतना प्रेम किया कि उसने यीशु को हमारे लिए मरने के लिए भेजा (यूहन्ना

3:16-17) और अपनी कृपा से हमें उद्धार भी दिया (इफिसियों 2:8)। और यही सुसमाचार का एक हिस्सा है (प्रेरितों 20:24)।

परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार ही वह है जिसकी दुनिया को आवश्यकता है, लेकिन...

शांति के लिए काम करना (मती 5:9) और भलाई करना सराहनीय लक्ष्य हैं (गलातियों 6:10)। फिर भी, कई विश्व नेता, जिनमें धार्मिक नेता भी शामिल हैं, मानते हैं कि शांति और समृद्धि परमेश्वर के राज्य से नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मानवीय सहयोग से आएगी। और यद्यपि उन्हें कुछ अस्थायी सफलताएँ मिलेंगी, वे न केवल असफल होंगे, बल्कि उनके कुछ मानवीय प्रयास अंततः पृथ्वी को ऐसी स्थिति में ले आएंगे कि यदि यीशु अपने राज्य की स्थापना के लिए वापस नहीं आते, तो जीवन असंभव हो जाएगा (मती 24:21-22)। परमेश्वर के बिना मनुष्यों द्वारा पृथ्वी को सुधारना व्यर्थ और झूठा उपदेश है (भजन संहिता 127:1)।

दुनिया में कई लोग एक अर्ध-धार्मिक बाबुली अंतर्राष्ट्रीय योजना बनाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि 21वीं सदी में एक नई विश्व व्यवस्था स्थापित की जा सके। यह वही है जिसे कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड ने अपनी स्थापना से ही निंदा की है और निंदा करना जारी रखने की योजना बनाई है। लगभग 6000 साल पहले (उत्पत्ति 3) जब शैतान ने हव्वा को अपने सुसमाचार के एक संस्करण में फंसाया, तब से कई मानवों ने यह विश्वास किया है कि वे भगवान से बेहतर जानते हैं कि उन्हें और दुनिया को क्या बेहतर बनाएगा।

बाइबल के अनुसार, यूरोप के एक सैन्य नेता (जिसे उत्तर का राजा कहा जाता है, जिसे प्रकाशितवाक्य 13:1-10 का पशु भी कहा जाता है) और सात पहाड़ियों के नगर (प्रकाशितवाक्य 17:9,18) से आए एक धार्मिक नेता (जिसे झूठा नबी कहा जाता है, जिसे अंतिम मसीह-विरोधी और प्रकाशितवाक्य 13:11-17 का दो सींगों वाला पशु भी कहा जाता है) के संयोजन से ही एक 'बाबुल जैसी' (प्रकाशितवाक्य 17 और 18) विश्व व्यवस्था स्थापित हो सकेगी। यद्यपि मानवजाति को मसीह की वापसी और

उनके राज्य की स्थापना की आवश्यकता है, फिर भी दुनिया के कई लोग 21वीं सदी में इस संदेश पर ध्यान नहीं देंगे—वे शैतान के झूठे सुसमाचार के विभिन्न संस्करणों पर विश्वास करते रहेंगे। लेकिन दुनिया को एक गवाह मिलेगा।

याद रखें कि यीशु ने सिखाया था:

¹⁴ और राज्य का यह सुसमाचार सारी दुनिया में सब जातियों के लिए गवाही के रूप में प्रचारित किया जाएगा, और तब अंत आ जाएगा। (मती 24:14)

ध्यान दें कि राज्य का सुसमाचार एक साक्षी के रूप में संसार तक पहुँचेगा, फिर अंत आएगा। वह "अंत" ही "महान क्लेश" की शुरुआत होगी।

इसके अनेक कारण हैं।

एक कारण यह है कि परमेश्वर चाहता है कि महासंकट (जिसका आरंभ मती 24:21 में दिखाया गया है) के प्रारंभ होने से पहले संसार सच्चे सुसमाचार को सुने। इस प्रकार, सुसमाचार का संदेश एक गवाही और एक चेतावनी है (देखें यहजेकेल 3; आमोस 3:7)। इसके परिणामस्वरूप यीशु के पुनः आने से पहले अन्यजातियों (रोमियों 11:25) और गैर-अन्यजातियों (रोमियों 9:27) का अधिक धर्म परिवर्तन होगा।

एक और कारण यह है कि संदेश का सार उत्तर के राक्षस की बढ़ती शक्ति और झूठे नबी, यानी अंतिम मसीह-विरोधी के विचारों के विपरीत होगा। वे दोनों मूल रूप से मानवीय प्रयासों और धार्मिक समझौते के माध्यम से शांति का वादा करेंगे, लेकिन यह अंत (मती 24:14-22) और विनाश (तुलना करें 1 थिस्सलुनीकियों 5:3) की ओर ले जाएगा।

भले ही बाइबल में सच्चे विश्वास के लिए संघर्ष करने (यहूदा 3), परमेश्वर के वचन को सत्य बताने (यूहन्ना 17:17) और सच्चे मसीहियों को मूर्तिपूजा से समझौता करने वालों से अलग रहने (2 कुरिन्थियों 6:14-17) की बात कही गई है, फिर भी कई

लोग दावा करेंगे कि उनके “सुसमाचार” (अच्छी खबर) में शांति और एकता बनाए रखने के लिए समझौता शामिल है। दुख की बात है कि परमेश्वर के राज्य के सच्चे सुसमाचार को भी पशु और झूठे नबी (अंतिम मसीह-विरोधी) के सर्वधर्म समन्वय और अंतरधार्मिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने वाले कई लोग झूठा सुसमाचार मानेंगे।

इनसे जुड़े चमत्कारों और झूठे आश्चर्यों के कारण (2 थिस्सलुनीकियों 2:9), दुनिया के अधिकांश लोग सुसमाचार के संदेश के बजाय झूठ पर विश्वास करना चुनेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 2:9-12)। रोमन कैथोलिक, पूर्वी ऑर्थोडॉक्स, लूथरन और अन्य लोगों द्वारा परमेश्वर के सहस्राब्दी राज्य की अनुचित निंदा के कारण, कई लोग गलत तरीके से दावा करेंगे कि परमेश्वर के राज्य के सहस्राब्दी सुसमाचार का संदेश वह झूठा सुसमाचार है जो शैतान और मसीह-विरोधी से जुड़ा है।

महा क्लेश के प्रारंभ से पहले, विश्वासयोग्य फिलाडेल्फिया के ईसाई (प्रकाशितवाक्य 3:7-13) दुनिया तक पहुँचेंगे (मती 24:14) राज्य के सहस्राब्दी सुसमाचार का प्रचार करेंगे और दुनिया को बताएंगे कि कुछ सांसारिक नेता (पशु और झूठे भविष्यवक्ता सहित) क्या करने वाले हैं।

वे दुनिया को यह संदेश देने में सहयोग करेंगे कि उत्तर की शक्ति का राजा, शैतान, झूठे नबी, अंतिम मसीह-विरोधी के साथ मिलकर अंततः संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे एंग्लो-राष्ट्रों को (अपने कुछ सहयोगियों सहित) नष्ट कर देगा (डेनियल 11:24,39) और उसके तुरंत बाद एक अरबी/इस्लामी संघ को नष्ट कर देगा (डेनियल 11:40-43), दुष्ट आत्माओं के उपकरण के रूप में कार्य करेगा (प्रकाशितवाक्य 16:13-14), और अंततः यीशु मसीह के लौटने पर उनसे युद्ध करेगा (प्रकाशितवाक्य 16:14; 19:19-20)। वफादार फिलाडेल्फियावासी (प्रकाशितवाक्य 3:7-13) यह घोषणा करेंगे कि परमेश्वर का सहस्राब्दि राज्य शीघ्र ही आ रहा है।

इससे संभवतः मीडिया में काफी सुर्खियां बटोरेंगी और मती 24:14 की पूर्ति में योगदान मिलेगा। हम कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड साहित्य (कई भाषाओं में) तैयार

कर रहा है, वेबसाइटों को अपडेट कर रहा है, और 'संक्षिप्त कार्य' (रोमियों 9:28 देखें) की तैयारी के लिए अन्य कदम उठा रहा है जो परमेश्वर के इस निर्धारण की ओर ले जाने में सहायक होगा कि मती 24:14 को अंत के लिए एक गवाह के रूप में पर्याप्त रूप से प्रदान किया गया है।

'झूठे सुसमाचार' का प्रचार करने वाले विश्व नेता (संभवतः यूरोप के किसी 'नए' प्रकार के शीर्ष नेता के साथ-साथ एक समझौतावादी पोप भी शामिल होंगे) दावा कैथोलिक धर्म के एक रूप का पालन करने वाले लोग इस घोषणा को पसंद नहीं करेंगे—वे नहीं चाहेंगे कि दुनिया को पता चले कि वे वास्तव में क्या करने वाले हैं (और शायद वे स्वयं भी शुरू में इस पर विश्वास न करें, देखें यशायाह 10:5-7)। वे और/या उनके समर्थक संभवतः यह झूठा प्रचार भी करेंगे कि फिलाडेल्फिया के वफादार ईसाई आने वाले मसीह-विरोधी के एक चरमपंथी सिद्धांत (सहस्राब्दीवाद) का समर्थन करेंगे। वे और/या उनके अनुयायियों द्वारा फिलाडेल्फिया के वफादारों और कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड के प्रति की जाने वाली कोई भी निंदा उत्पीड़न को जन्म देगी (डेनियल 11:29-35; प्रकाशितवाक्य 12:13-15)। इससे अंत की शुरुआत होगी—महाकलेश की शुरुआत (मती 24:21; डेनियल 11:39; तुलना करें मती 24:14-15; डेनियल 11:31) और साथ ही फिलाडेल्फिया के विश्वासयोग्य मसीहियों के लिए साढ़े तीन साल का संरक्षण काल भी आएगा (प्रकाशितवाक्य 3:10; 12:14-16)।

शैतान और झूठा नबी नियंत्रण पाने के लिए बल प्रयोग, आर्थिक ब्लैकमेल, चमत्कार, झूठे आश्चर्य, हत्या और अन्य दबावों का सहारा लेंगे (प्रकाशितवाक्य 13:10-17; 16:14; डेनियल 7:25; 2 थिस्सलुनीकियों 2:9-10)। ईसाई पूछेंगे:

¹⁰ "हे पवित्र और सच्चे प्रभु, कब तक आप पृथ्वी पर रहने वालों से हमारे खून का बदला नहीं लेंगे?" (प्रकाशितवाक्य 6:10)

सदियों से, परमेश्वर के लोग आश्चर्य करते आए हैं और पूछते आए हैं, "यीशु के लौटने में कितना समय लगेगा?"

हम नहीं जानते कि दिन या घड़ी कब है, लेकिन हम उम्मीद करते हैं कि यीशु 21वीं शताब्दी में लौटेंगे (और परमेश्वर का सहस्राब्दि राज्य स्थापित होगा) बहुत से धर्मग्रंथों (जैसे मती 24:4-34; भजन 90:4; होशे 6:2; लूका 21:7-36; इब्रानियों 1:1-2; 4:4,11; 2 पतरस 3:3-8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:4) के आधार पर, जिनमें से कुछ भाग अब हम पूरे होते हुए देख रहे हैं।

यदि यीशु हस्तक्षेप नहीं करते, तो मानवता सभी जीवन का विनाश कर देगी:

²¹ क्योंकि तब ऐसा भयंकर संकट आएगा, जैसा जगत के आरंभ से लेकर अब तक कभी नहीं आया, न ही कभी आएगा। ²² और यदि वे दिन कम न किए जाते, तो कोई भी जीवित नहीं बचता; परन्तु चुने हुए लोगों के खातिर वे दिन कम किए जाएँगे। (मती 24:21-22)

²⁹ उन दिनों की विपत्ति के तुरंत बाद सूर्य अंधकारमय हो जाएगा, और चंद्रमा अपना प्रकाश नहीं देगा; तारे आकाश से गिरेंगे, और आकाश की शक्तियाँ हिल जाएगी। ³⁰ तब स्वर्ग में मनुष्य के पुत्र का चिन्ह प्रकट होगा, और तब पृथ्वी की सभी जातियाँ विलाप करेंगी, और वे मनुष्य के पुत्र को स्वर्ग के बादलों पर सामर्थ्य और महान महिमा के साथ आते हुए देखेंगे। ³¹ और वह तुरही की बड़ी ध्वनि के साथ अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके चुने हुए लोगों को चारों दिशाओं से, आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक, एकत्रित करेंगे। (मती 24:29-31)

दुनिया को परमेश्वर के राज्य की आवश्यकता है।

राज्य के राजदूत

ईश्वर के राज्य में आपकी क्या भूमिका है?

अभी, यदि आप सच्चे ईसाई हैं, तो आपको यीशु और परमेश्वर के राज्य के राजदूत बनना है। ध्यान दीजिए कि प्रेरित पौलुस ने क्या लिखा है:

²⁰ इसलिए, अब हम मसीह के दूत हैं, मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा हो: हम मसीह की ओर से तुमसे विनती करते हैं, परमेश्वर से मेल-मिलाप करो। (2 कुरिन्थियों 5:20)

¹⁴ इसलिए सत्य से अपनी कमर कस कर खड़े रहो, धर्म की कवच पहन लो।
¹⁵ और अपने पैरों में शांति के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहन लो; ¹⁶ सबसे बढ़कर, विश्वास की ढाल धारण करो, जिससे तुम दुष्ट के सभी अग्नि-बाणों को बुझा सकोगे। ¹⁷ और उद्धार का हेलमेट और आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, धारण करो; ¹⁸ आत्मा में सदा प्रार्थना और विनती करते रहो, समस्त संतों के लिए समस्त धैर्य और विनती के साथ इस उद्देश्य की प्रतीक्षा करते रहो। ¹⁹ और मुझे वह वाणी दी जाए जिससे मैं साहसपूर्वक अपना मुख खोलकर सुसमाचार के रहस्य का प्रचार कर सकूँ। ²⁰ जिसके लिए मैं जंजीरों में जकड़ा हुआ राजदूत हूँ; ताकि मैं साहसपूर्वक बोल सकूँ, जैसा मुझे बोलना चाहिए। (इफिसियों 6:14-20)

राजदूत क्या होता है? मेरियम-वेबस्टर इसकी परिभाषा निम्नलिखित है:

1: एक आधिकारिक दूत; विशेष रूप से: किसी विदेशी सरकार या संप्रभुता के सर्वोच्च रैंक का राजनयिक प्रतिनिधि, जो अपनी सरकार या संप्रभुता के स्थायी प्रतिनिधि के रूप में मान्यता प्राप्त होता है या जिसे किसी विशेष और अक्सर अस्थायी राजनयिक कार्य के लिए नियुक्त किया जाता है।

2 ए: एक अधिकृत प्रतिनिधि या संदेशवाहक

यदि आप सच्चे ईसाई हैं, तो आप मसीह के आधिकारिक दूत हैं! ध्यान दीजिए कि प्रेरित पतरस ने क्या लिखा है:

⁹ लेकिन तुम चुनी हुई पीढ़ी हो, एक शाही पुरोहित वर्ग हो, एक पवित्र राष्ट्र हो, उसे अपने विशेष लोग हो, ताकि तुम उसकी स्तुति का प्रचार करो जिसने तुम्हें अंधकार से निकालकर अपने अद्भुत प्रकाश में बुलाया है; ¹⁰ जो पहले

कोई जाति नहीं थे, परन्तु अब परमेश्वर की जाति हैं; जिन्हें दया नहीं मिली थी, परन्तु अब दया मिली है। (1 पतरस 2:9-10)

ईसाई होने के नाते, हमें एक पवित्र राष्ट्र का हिस्सा बनना है।

अब कौन सा राष्ट्र पवित्र है?

इस संसार के कोई भी राज्य निश्चित रूप से मसीह के राज्य का हिस्सा नहीं होंगे— परन्तु वे अंततः मसीह के राज्य का हिस्सा होंगे (प्रकाशितवाक्य 11:15)। यह परमेश्वर का राष्ट्र है, उसका पवित्र राज्य है।

राजदूतों के रूप में, हम सामान्यतः इस दुनिया के राष्ट्रों की प्रत्यक्ष राजनीति में शामिल नहीं होते हैं। लेकिन हमें अब ईश्वर के बताए मार्ग पर चलना है (निःशुल्क उपलब्ध ईबुक भी देखें)। www.ccog.org शीर्षक: ईसाई: परमेश्वर के राज्य के राजदूत, ईसाई के रूप में जीवन जीने के लिए बाइबल संबंधी निर्देश परमेश्वर के बताए मार्ग पर चलकर, हम बेहतर ढंग से समझ पाते हैं कि परमेश्वर के मार्ग सर्वोत्तम क्यों हैं, ताकि उनके राज्य में हम राजा और याजक बन सकें और पृथ्वी पर मसीह के साथ शासन कर सकें।

⁵ जिसने हमसे प्रेम किया और अपने लहू से हमारे पापों को धो डाला, उसे हमारी स्तुति हो। ⁶ और उसने हमें अपने परमेश्वर पिता के लिए राजा और याजक बनाया है; सदा सर्वदा उसी की महिमा और प्रभुत्व हो। आमीन। (प्रकाशितवाक्य 1:5-6)

¹⁰ और उन्होंने हमें हमारे परमेश्वर के लिए राजा और याजक बनाया है; और हम पृथ्वी पर राज करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 5:10)

राजा और पुजारी बनने का एक भावी पहलू यह होगा कि वे उस समय के नश्वर प्राणियों को ईश्वर के मार्ग पर चलना सिखाएंगे:

¹⁹ लोग यरूशलेम के सिय्योन में निवास करेंगे; अब तुम और नहीं रोओगे। जब तुम्हारी पुकार सुनी जाएगी, वह तुम पर बहुत कृपा करेगा; जब वह इसे सुनेगा, तो वह तुम्हें उतर देगा। ²⁰ और यद्यपि प्रभु तुम्हें विपत्ति की रोटी और दुःख का पानी देता है, तब भी तुम्हारे शिक्षक अब किसी को दूर नहीं करेंगे; बल्कि तुम्हारी आँखें तुम्हारे शिक्षकों को देखेंगी। ²¹ जब तुम दाहिनी ओर मुड़ो या बाईं ओर मुड़ो, तब तुम्हारे कान पीछे से एक शब्द सुनेंगे, “यह मार्ग है, इसी पर चलो।” (यशायाह 30:19-21)

हालांकि यह सहस्राब्दि राज्य के लिए एक भविष्यवाणी है, इस युग में ईसाइयों को सिखाने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है:

¹² ... इस समय तक तो तुम्हें शिक्षक बन जाना चाहिए था, (इब्रानियों 5:12)

¹⁵ परन्तु अपने हृदयों में प्रभु परमेश्वर को पवित्र मानना; और जो कोई तुझमें आशा का कारण पूछे, उसे नम्रता और भय के साथ उत्तर देने के लिए सदा तत्पर रहो। (1 पतरस 3:15, केवी)

बाइबल दर्शाती है कि महासंकट के प्रारंभ होने से ठीक पहले, कई वफादार ईसाई बहुतों को उपदेश देंगे:

³³ और जो लोग समझते हैं वे बहुतों को शिक्षा देंगे (डेनियल 11:33)।

इसलिए, अनुग्रह और ज्ञान में सीखना और बढ़ना (2 पतरस 3:18) वह काम है जो हमें अभी करना चाहिए। यीशु ने कहा, “तुम यरूशलेम में, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी के छोर तक मेरे साक्षी होगे” (प्रेरितों 1:8)। परमेश्वर के राज्य में आपकी भूमिका का एक हिस्सा सिखाने की क्षमता रखना है।

और अधिक विश्वासयोग्य, फ़िलाडेल्फिया के मसीहियों (प्रकाशितवाक्य 3:7-13) के लिए, इसमें परमेश्वर के सहस्राब्दी राज्य की शुरुआत से पहले महत्वपूर्ण सुसमाचार गवाही का समर्थन करना भी शामिल होगा (तुलना करें मती 24:14)।

परमेश्वर के राज्य की स्थापना के बाद, परमेश्वर के लोगों का उपयोग क्षतिग्रस्त ग्रह को पुनर्स्थापित करने में किया जाएगा:

¹² तुममें से जो लोग होंगे, वे पुराने उजड़े हुए स्थानों का पुनर्निर्माण करेंगे; तुम अनेक पीढ़ियों की नींव रखोगे; और तुम्हें दरारों की मरम्मत करने वाला, और रहने योग्य सड़कों को पुनर्स्थापित करने वाला कहा जाएगा। (यशायाह 58:12)

इस प्रकार, इस युग में परमेश्वर के मार्ग पर चलने वाले परमेश्वर के लोग सहस्राब्दी के दौरान पुनर्स्थापना के इस समय में लोगों के लिए शहरों (और अन्य जगहों) में रहना आसान बना देंगे।

दुनिया वाकई एक बेहतर जगह बन जाएगी। हमें अभी से मसीह के दूत बनना चाहिए, ताकि हम उनके राज्य में भी सेवा कर सकें।

सच्चे सुसमाचार का संदेश परिवर्तनकारी है।

यीशु ने कहा, “यदि तुम मेरे वचन में बने रहो, तो तुम सचमुच मेरे शिष्य हो। 32 और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा” (यूहन्ना 8:31-32)। परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के सत्य को जानने से हम इस संसार की झूठी आशाओं के जाल से मुक्त हो जाते हैं। हम साहसपूर्वक उस योजना का समर्थन कर सकते हैं जो कारगर है—परमेश्वर की योजना! शैतान ने पूरे संसार को धोखा दिया है (प्रकाशितवाक्य 12:9) और परमेश्वर का राज्य ही सच्चा समाधान है। हमें सत्य के लिए खड़े होना और उसका प्रचार करना चाहिए (यूहन्ना 18:37 देखें)।

सुसमाचार का संदेश केवल व्यक्तिगत उद्धार से कहीं अधिक है। परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार इस युग में व्यक्ति को रूपांतरित कर देना चाहिए।

² और इस संसार के अनुरूप मत बनो, बल्कि अपने मन को नया करके रूपांतरित हो जाओ, ताकि तुम परमेश्वर की भली, स्वीकार्य और परिपूर्ण इच्छा को जान सको। (रोमियों 12:2)

सच्चे ईसाई परमेश्वर और दूसरों की सेवा करने के लिए रूपांतरित हो जाते हैं:

²² हे दासों, अपने शारीरिक स्वामियों की सब बातों में आज्ञा मानो, दिखावे के लिए या मनुष्यों को प्रसन्न करने के लिए नहीं, बल्कि सच्चे मन से और परमेश्वर का भय मानते हुए। ²³ और तुम जो भी करो, उसे पूरे मन से करो, मानो प्रभु के लिए कर रहे हो, न कि मनुष्यों के लिए। ²⁴ यह जानते हुए कि प्रभु से ही तुम्हें विरासत का प्रतिफल मिलेगा; क्योंकि तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। (कुलुस्सियों 3:22-24)

²⁸ इसलिए, क्योंकि हमें एक ऐसा राज्य मिल रहा है जिसे हिलाया नहीं जा सकता, आइए हम अनुग्रह प्राप्त करें, जिसके द्वारा हम आदर और ईश्वरीय भय के साथ परमेश्वर की सेवा स्वीकार्य तरीके से कर सकें। (इब्रानियों 12:28)

सच्चे मसीही दुनिया से अलग जीवन जीते हैं। हम सही और गलत के लिए दुनिया के मानकों से ऊपर परमेश्वर के मानकों को स्वीकार करते हैं। धर्मी लोग विश्वास से जीते हैं (इब्रानियों 10:38), क्योंकि इस युग में परमेश्वर के मार्ग पर चलने के लिए विश्वास आवश्यक है। मसीही लोग जिस दुनिया में रहते थे, उससे इतने अलग माने जाते थे कि नए नियम में उनके जीवन जीने के तरीके को “मार्ग” कहा गया है (प्रेरितों 9:2; 19:9; 24:14,22)। दुनिया स्वार्थ से भरी है, शैतान के प्रभाव में धोखे में है, और उसके जीवन को “कैन का मार्ग” कहा गया है (यहूदा 11)।

परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार धार्मिकता, आनंद और शांति का संदेश है (रोमियों 14:17)। भविष्यवाणी का वचन, सही ढंग से समझने पर, दिलासा देने वाला है (देखें 1 कुरिन्थियों 14:3; 1 थिस्सलुनीकियों 4:18), विशेषकर जब हम संसार को बिखरते हुए देखते हैं (देखें लूका 21:8-36)। सच्चा मसीही जीवन जीने का तरीका आत्मिक समृद्धि और भौतिक आशीषों की ओर ले जाता है (मरकुस 10:29-30)। यही कारण है कि जो लोग इस जीवन शैली को जीते हैं, वे समझते हैं कि संसार को परमेश्वर के राज्य की आवश्यकता है। मसीही परमेश्वर के राज्य के दूत हैं।

ईसाई लोग भौतिक संसार में रहते हुए भी, आध्यात्मिक चीजों में अपनी आशा रखते हैं, भौतिक चीजों में नहीं (रोमियों 8:5-8)। हमारे पास “सुसमाचार की आशा” है (कुलुस्सियों 1:23)। यह एक ऐसी बात है जिसे प्रारंभिक ईसाई समझते थे, लेकिन आज यीशु पर विश्वास करने वाले बहुत से लोग इसे पूरी तरह से नहीं समझते।

6. ग्रीको-रोमन चर्च सिखाते हैं कि ईश्वर का राज्य महत्वपूर्ण है, लेकिन...

ग्रीको-रोमन चर्चों का मानना है कि वे ईश्वर के राज्य के पहलुओं को सिखाते हैं, लेकिन वास्तव में यह क्या है, इसे समझने में उन्हें कठिनाई होती है। उदाहरण के लिए, कैथोलिक विश्वकोश यह राज्य के बारे में यह सिखाता है:

ईसा मसीह के उपदेशों में, इस राज्य का आगमन, इसके विभिन्न पहलू, इसका सटीक अर्थ और इसे प्राप्त करने का तरीका, हर चरण में उनके प्रवचनों का मुख्य विषय रहा है, यहाँ तक कि उनके प्रवचन को "राज्य का सुसमाचार" कहा जाता है... लोग चर्च को "ईश्वर का राज्य" कहने लगे; देखें कुलुस्सियों, 1:13; 1 थिस्सलुनीकियों, 2:12; प्रकाशितवाक्य, 1:6:9; 5:10, आदि... इसका अर्थ है चर्च एक दिव्य संस्था के रूप में... (Pope H. Kingdom of God. The Catholic Encyclopedia, Volume VIII. 1910)

हालांकि ऊपर दिए गए संदर्भ में "कुलुस्सियों, 1, 13; 1 थिस्सलुनीकियों, 2, 12; प्रकाशितवाक्य, 1, 6, 9; 5, 10" का उल्लेख किया गया है, लेकिन यदि आप इन्हें देखेंगे, तो पाएंगे कि इनमें से किसी भी आयत में इसके बारे में कुछ नहीं कहा गया है। **चर्च परमेश्वर** का राज्य। वे सिखाते हैं कि विश्वासी परमेश्वर के राज्य का हिस्सा होंगे या यह यीशु का राज्य है। बाइबल चेतावनी देती है कि बहुत से लोग सुसमाचार को बदल देंगे या किसी दूसरे, झूठे सुसमाचार की ओर मुड़ जाएंगे (गलतियों 1:3-9)। दुख की बात है कि कई लोगों ने ऐसा किया भी है।

यीशु ने सिखाया, "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ। मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं आ सकता" (यूहन्ना 14:6)। पतरस ने सिखाया, "किसी और में उद्धार नहीं है, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई और नाम नहीं है जिससे हमारा उद्धार हो" (प्रेरितों 4:12)। पतरस ने यहूदियों से कहा कि उद्धार पाने के लिए सभी को पश्चाताप करने और यीशु को स्वीकार करने का विश्वास होना चाहिए (प्रेरितों 2:38)।

इसके विपरीत, दिवंगत पोप फ्रांसिस ने सिखाया है कि नास्तिक, यीशु के बिना भी, अच्छे कर्मों से उद्धार पा सकते हैं! उन्होंने यह भी सिखाया है कि यहूदी यीशु को स्वीकार किए बिना भी उद्धार पा सकते हैं! इसके अलावा, वे और कुछ ग्रीको-रोमन यह भी मानते हैं कि 'मैरी' का एक गैर-बाइबल संस्करण सुसमाचार की कुंजी होने के साथ-साथ अंतरधार्मिक एकता की भी कुंजी है। दुख की बात है कि वे और अन्य लोग न तो यीशु के महत्व को समझते हैं और न ही परमेश्वर के राज्य के सच्चे सुसमाचार को। कई लोग झूठे सुसमाचारों का प्रचार कर रहे हैं।

बहुत से लोग देखकर चलना चाहते हैं और दुनिया पर भरोसा रखते हैं। नया नियम सिखाता है कि ईसाइयों को ऊपर की ओर देखना चाहिए:

² पृथ्वी की बातों की बजाय ऊपर की बातों पर ध्यान लगाओ। (कुलुस्सियों 3:2)

⁷ क्योंकि हम दृष्टि से नहीं, बल्कि विश्वास से चलते हैं। (2 कुरिन्थियों 5:7)

फिर भी, पोप पायस XI ने मूल रूप से अपने चर्च के दर्शन के अनुसार चलने की शिक्षा दी:

कैथोलिक चर्च पृथ्वी पर मसीह का राज्य है। (Pius's encyclical *Quas Primas*).

कैथोलिक बाइबल 101 वेबसाइट का दावा है, "ईश्वर का राज्य पृथ्वी पर यीशु मसीह द्वारा 33 ईस्वी में, पतरस के नेतृत्व में उनके चर्च के रूप में स्थापित किया गया था... कैथोलिक चर्च।" फिर भी, ईश्वर का सहस्राब्दी राज्य न तो यहाँ है और न ही रोम का चर्च। जब यह आएगा, तब पृथ्वी पर होगा। यद्यपि ईश्वर के सच्चे चर्च के पास "राज्य की कुंजी" (मती 16:19) है, फिर भी जो लोग किसी चर्च को ईश्वर का राज्य बताते हैं, उन्होंने "ज्ञान की कुंजी छीन ली है" (लूका 11:52)।

रोम का चर्च परमेश्वर के एक सहस्राब्दी राज्य के शीघ्र आगमन के विरुद्ध इतनी दृढ़ता से शिक्षा देता है कि यह मूल रूप से आधिकारिक ग्रंथों में सूचीबद्ध एकमात्र "मसीह-विरोधी का सिद्धांत" है। कैथोलिक चर्च की धर्मशिक्षा:

676 जब भी इतिहास में उस मसीहाई आशा को साकार करने का दावा किया जाता है, जो केवल अंतिम न्याय के माध्यम से ही इतिहास से परे साकार हो सकती है, तब मसीह-विरोधी का छल संसार में आकार लेने लगता है। चर्च ने सहस्राब्दीवाद के नाम पर आने वाले राज्य के इस मिथ्याकरण के संशोधित रूपों को भी अस्वीकार कर दिया है... (Catechism of the Catholic Church. Imprimatur Potest +Joseph Cardinal Ratzinger. Doubleday, NY 1995, p. 194)

दुख की बात है कि जो लोग इस मत से सहमत हैं, उन्हें अंत में परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के प्रचार में बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। कुछ लोग इसका प्रचार करने वालों के खिलाफ भयानक कदम उठाएंगे (डेनियल 7:25; 11:30-36)। लेकिन, आप सोच सकते हैं, क्या वे सभी जो यीशु को प्रभु मानते हैं, राज्य में नहीं होंगे? नहीं, वे नहीं होंगे। ध्यान दीजिए यीशु ने क्या कहा:

²¹ "जो कोई मुझसे कहता है, 'हे प्रभु, हे प्रभु,' वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु वही प्रवेश करेगा जो स्वर्ग में मेरे पिता की इच्छा पूरी करता है।" ²² उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने आपके नाम से भविष्यवाणी नहीं की, आपके नाम से दुष्ट आत्माओं को नहीं निकाला और आपके नाम से बहुत से चमत्कार नहीं किए?' ²³ और तब मैं उनसे कहूँगा, 'मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था; मुझसे दूर हो जाओ, तुम जो अधर्म करते हो!' (मत्ती 7:21-23)

प्रेरित पौलुस ने अपने समय में "अधर्म का रहस्य" पहले से ही "काम कर रहा था" (2 थिस्सलुनीकियों 2:7) बताया। यह अधर्म उस चीज़ से भी संबंधित है जिसके बारे में

बाइबल अंत समय में चेतावनी देती है, जिसे "रहस्य, महान बाबुल" (प्रकाशितवाक्य 17:3-5) कहा जाता है।

"अधर्म का रहस्य" उन ईसाईयों से संबंधित है जो यह मानते हैं कि उन्हें ईश्वर की दस आज्ञाओं आदि का पालन करने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है, और/या इसके कई स्वीकार्य अपवाद हैं, और/या ईश्वर के नियम को तोड़ने के लिए प्रायश्चित के स्वीकार्य रूप हैं। इसलिए, यद्यपि वे सोचते हैं कि उनके पास ईश्वर के नियम का एक रूप है, वे ईसाई धर्म के उस रूप का पालन नहीं कर रहे हैं जिसे यीशु या उनके प्रेरित वैध मानते।

बहुत से लोग जो ईसाई होने का दावा करते हैं, वे फरीसियों के समान हैं जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया, लेकिन दावा किया कि उनकी परंपराओं ने इसे स्वीकार्य बना दिया है—यीशु ने इस दृष्टिकोण की निंदा की (मती 15:3-9)! यशायाह ने भी चेतावनी दी थी कि जो लोग परमेश्वर के होने का दावा करते हैं वे उसकी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करेंगे (यशायाह 30:9)। दुख की बात है कि यह अधर्मी विद्रोह आज भी देखने को मिलता है।

एक और "रहस्य" यह प्रतीत होता है कि रोम का चर्च मानता है कि उसके सैन्यवादी सर्वधर्म समन्वय और अंतरधार्मिक एजेंडे से शांति और पृथ्वी पर ईश्वर के राज्य का एक गैर-बाइबल संस्करण स्थापित होगा। पवित्रशास्त्र आने वाली सर्वधर्म समन्वय एकता के विरुद्ध चेतावनी देता है, जिसके बारे में वह सिखाता है कि यह कुछ वर्षों के लिए सफल होगी (नोट: नया यरूशलेम बाइबल (रोमन कैथोलिक द्वारा अनुमोदित अनुवाद दिखाया गया है):

4 उन्होंने अजगर के सामने दंडवत प्रणाम किया क्योंकि अजगर ने ही उस जानवर को अपना अधिकार दिया था; और उन्होंने उस जानवर के सामने दंडवत प्रणाम करते हुए कहा, 'कौन उस जानवर का मुकाबला कर सकता है? कौन उससे लड़ सकता है?' 5 उस दरिंदे को बयालीस महीने तक अपनी शेखी बघारने और ईशनिंदा करने की छूट दी गई और उसे सक्रिय रहने दिया

गया; ⁶ और इसने ईश्वर के विरुद्ध, उसके नाम के विरुद्ध, उसके स्वर्गीय तम्बू के विरुद्ध और वहाँ शरण लेने वाले सभी लोगों के विरुद्ध निंदात्मक बातें कहीं। ⁷ इसे संतों के विरुद्ध युद्ध करने और उन्हें जीतने की अनुमति दी गई थी, और इसे हर जाति, लोग, भाषा और राष्ट्र पर अधिकार दिया गया था; ⁸ और संसार के सभी लोग इसकी पूजा करेंगे, अर्थात् वे सभी लोग जिनका नाम संसार की रचना के समय से लेकर अब तक बलि के मेमने की जीवन पुस्तक में नहीं लिखा गया है। ⁹ जो भी सुन सकता है, वह सुने: ¹⁰ जो कैद में जाने के लिए तैयार हैं, वे कैद में ही जाएंगे; जो तलवार से मारे जाने के लिए तैयार हैं, वे तलवार से ही मारे जाएंगे। इसलिए संतों को धीरज और विश्वास रखना चाहिए। (प्रकाशितवाक्य 13:4-10, एनजेबी)

बाइबल अंत समय में बेबीलोन की एकता के खिलाफ चेतावनी देती है:

¹ सात कटोरे लिए हुए सात स्वर्गदूतों में से एक मेरे पास आकर बोला, 'यहाँ आओ और मैं तुम्हें उस महान वेश्या का दंड दिखाऊँगा जो प्रचुर जल के किनारे सिंहासन पर विराजमान है।' ² जिसके साथ पृथ्वी के सभी राजाओं ने व्यभिचार किया है, और जिसने अपने व्यभिचार के नशे में संसार की समस्त जनसंख्या को मदहोश कर दिया है।' ³ वह मुझे आत्मा के रूप में एक रेगिस्तान में ले गया, और वहाँ मैंने एक स्त्री को एक लाल रंग के जानवर पर सवार देखा जिसके सात सिर और दस सींग थे और उस पर ईशनिंदा वाले शीर्षक लिखे हुए थे। ⁴ वह महिला बैंगनी और लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थी और सोने, रत्नों और मोतियों से जगमगा रही थी, और उसके हाथ में एक सोने का शराब का प्याला था जो उसके वेश्यावृत्ति के घिनौने मैल से भरा हुआ था; ⁵ उसके माथे पर एक नाम लिखा था, एक रहस्यमय नाम: 'महान बेबीलोन, पृथ्वी पर सभी वेश्याओं और सभी घृणित प्रथाओं की जननी' ⁶ मैंने देखा कि वह नशे में चूर थी, संतों के लहू और यीशु के शहीदों के लहू से मदहोश थी; और जब मैंने उसे देखा, तो मैं पूरी तरह से स्तब्ध रह गया। (प्रकाशितवाक्य 17:1-6, एनजेबी)

⁹ इसके लिए चतुराई की आवश्यकता है। सात सिर सात पहाड़ियाँ हैं जिस पर महिला बैठी है... ¹⁸ आपने जिस महिला को देखा वह है... महान शहर जिसका पृथ्वी पर सभी शासकों पर अधिकार है।' (प्रकाशितवाक्य 17:9,18, एनजेबी)

¹ इसके बाद मैंने स्वर्ग से एक और स्वर्गदूत को गिरते देखा, जिसे महान अधिकार दिया गया था; पृथ्वी उसकी महिमा से जगमगा उठी। उसने अपनी पूरी आवाज में चिल्ला कर कहा, 'बेबीलोन का पतन हो गया है। महान बेबीलोन इसका पतन हो गया है, और यह शैतानों का अड्डा बन गया है और हर दुष्ट आत्मा और गंदे, घिनौने पक्षी का निवास स्थान बन गया है। ³ सभी राष्ट्रों ने उसके व्यभिचार की मदिरा का भरपूर सेवन किया है; पृथ्वी पर प्रत्येक राजा ने उसके साथ व्यभिचार किया है, और प्रत्येक व्यापारी उसके दुराचार से धनी हो गया है। ⁴ स्वर्ग से एक और आवाज आई; मैंने उसे कहते सुना, 'हे मेरे लोगो, उससे दूर चले आओ, ताकि तुम उसके अपराधों में भागीदार न बनो और उसी विपत्ति का सामना न करो। ⁵ उसके पाप आसमान तक पहुँच गए हैं, और ईश्वर को उसके अपराधों का हिसाब है: उसके साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा उसने दूसरों के साथ किया है। ⁶ उसे उसके द्वारा वसूले गए धन का दुगुना भुगतान किया जाना चाहिए। उसे अपने ही बनाए मिश्रण का दुगुना गाढ़ा प्याला दिया जाना चाहिए। ⁷ उसके हर वैभव और उत्सव के पीछे कोई न कोई यातना या पीड़ा होगी। वह सोचती है, मैं रानी के रूप में सिंहासन पर विराजमान हूँ; मैं विधवा नहीं हूँ और कभी शोक का अनुभव नहीं करूंगी। ⁸ इसके लिए, एक ही दिन में उस पर विपत्तियाँ आ पड़ेंगी: रोग, शोक और अकाल। वह जलकर राख हो जाएगी। जिस परमेश्वर ने उसे दोषी ठहराया है, वह सर्वशक्तिमान है।' ⁹ "पृथ्वी के राजा उसके लिए शोक मनाएंगे और विलाप करेंगे, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार किया और उसके साथ अय्याशी की। वे उसके जलने से निकलने वाला धुआँ देखेंगे।" (प्रकाशितवाक्य 18:1-9, एनजेबी)

जकर्याह में, बाइबल आने वाले बाबुल के खिलाफ चेतावनी देती है और दिखाती है कि उचित एकता तब तक नहीं होगी जब तक बाद यीशु लौटते हैं:

¹⁰ सावधान! सावधान! उत्तर की भूमि से भाग जाओ - यहोवा घोषणा करता है - क्योंकि मैंने तुम्हें आकाश की चारों दिशाओं में बिखेर दिया है - यहोवा घोषणा करता है। ¹¹ सावधान! भाग निकलो! **सिय्योन, अब बेबीलोन की बेटी के साथ रह रही है!**

¹² यहोवा सबाओथ यह कहता है, क्योंकि महिमा ने यह आदेश दिया है मुझे, उन राष्ट्रों के बारे में जिन्होंने तुम्हें लूटा, 'जो कोई भी तुम्हें छुएगा, वह मेरी आंखों की पुतली को छुएगा।' ¹³ अब देखो, मैं उन पर अपना हाथ हिलाऊंगा और जिन्हें उन्होंने गुलाम बनाया है, वे ही उन्हें लूट लेंगे। तब तुम जान जाओगे कि यहोवा सबाओथ ने मुझे भेजा है! ¹⁴ हे सिय्योन की पुत्री, गाओ, आनन्द करो, क्योंकि अब मैं तुम्हारे बीच रहने आ रहा हूँ - यहोवा घोषणा करता है! ¹⁵ और उस दिन बहुत से राष्ट्र यहोवा की ओर मुड़ेंगे। हाँ, वे उसके लोग बन जाएँगे और तुम्हारे बीच में रहेंगे। तब तुम जान जाओगे कि यहोवा सबाओथ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है! ¹⁶ यहोवा यहूदा पर अधिकार करेगा, जो पवित्र भूमि में उसका हिस्सा है, और यरूशलेम को फिर से अपना पसंदीदा स्थान बनाएगा। (जकर्याह 2:10-16, एनजेबी; ध्यान दें कि केजेवी/एनकेजेवी संस्करणों में ये पद जकर्याह 2:6-12 के रूप में सूचीबद्ध हैं)

हालांकि कुछ मामलों में सहयोग अच्छा हो सकता है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र, वेटिकन, कई प्रोटेस्टेंट और पूर्वी ऑर्थोडॉक्स नेताओं द्वारा प्रचारित सर्वधर्म समन्वय और अंतरधार्मिक आंदोलनों के कुछ पहलुओं की बाइबिल में स्पष्ट रूप से निंदा की गई है और उन्हें प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। यीशु ने ऐसे लोगों के प्रति आगाह किया था। का दावा उसका अनुसरण करना जो "बहुतों को धोखा देगा" (मत्ती 24:4-5)। बहुत से सर्वधर्म समन्वय का संबंध प्रकाशितवाक्य 6:1-2 की पहली मुहर के

खुलने से हैं, जिसे प्रकाशितवाक्य का “श्वेत घुड़सवार” (जो यीशु नहीं है) और प्रकाशितवाक्य 17 की वेश्या के नाम से भी जाना जाता है।

जकर्याह की तरह, प्रेरित पौलुस ने भी सिखाया कि विश्वास की सच्ची एकता तब तक नहीं होगी जब तक बाद यीशु लौटते हैं:

13 जब तक हम सब परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास और ज्ञान में एकता प्राप्त न कर लें और मसीह की परिपूर्णता से पूर्ण रूप से परिपक्व मनुष्य न बन जाएँ। (इफिसियों 4:13, एनजेबी)

जो लोग यह मानते हैं कि यह एकता यीशु के आगमन से पहले ही आ जाएगी, वे गलत हैं। वास्तव में, जब यीशु लौटेंगे, तो उन्हें उन राष्ट्रों की एकता को नष्ट करना होगा जो उनके विरुद्ध एकजुट होंगे।

11:15 फिर सातवें स्वर्गदूत ने अपना तुरही बजाया, और स्वर्ग में जयजयकार की आवाजें सुनाई देने लगीं, जो पुकार रही थीं, 'संसार का राज्य हमारे प्रभु और उसके मसीह का राज्य बन गया है, और वह सदा-सर्वदा राज्य करेगा।'

16 ईश्वर की उपस्थिति में सिंहासन पर विराजमान चौबीस बुजुर्गों ने साष्टांग प्रणाम किया और ईश्वर की आराधना करते हुए अपने माथे से जमीन को छुआ। 17 इन शब्दों के साथ, 'हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो हैं, जो थे, हम आपको धन्यवाद देते हैं, क्योंकि आपने अपनी महान शक्ति को ग्रहण किया और अपना शासन शुरू किया।' 18 राष्ट्रों में उथल-पुथल मची हुई थी, और अब आपके प्रतिशोध का समय आ गया है, और मृतकों का न्याय होने का, और आपके सेवकों, भविष्यवक्ताओं, संतों और आपके नाम से डरने वाले सभी लोगों को, चाहे वे छोटे हों या बड़े, पुरस्कृत किए जाने का। पृथ्वी को नष्ट करने वालों को नष्ट करने का समय आ गया है। (प्रकाशितवाक्य 11:15-18, एनजेबी)

19:6 और मैंने एक विशाल भीड़ की आवाज़ें सुनी, जैसे समुद्र की आवाज़ या गरजते बादलों की गर्जना, जो उत्तर दे रही थीं, 'हल्लेलुया! हमारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा का राज्य शुरू हो गया है; ...' 19 फिर मैंने उस जानवर को देखा, और पृथ्वी के सभी राजाओं और उनकी सेनाओं को उस घुड़सवार और उसकी सेना से लड़ने के लिए इकट्ठा होते हुए देखा। 20 लेकिन उस राक्षस को, उस झूठे नबी के साथ, जिसने राक्षस की ओर से चमत्कार किए थे और उनके द्वारा उन लोगों को धोखा दिया था जिन्होंने राक्षस के चिह्न से दाग लगवाया था और जिन्होंने उसकी मूर्ति की पूजा की थी, बंदी बना लिया गया। इन दोनों को जीवित ही जलते हुए गंधक की आग की झील में फेंक दिया गया। 21 बाकी सभी को घुड़सवार की तलवार ने मार डाला, जो उसके मुंह से निकली थी, और सभी पक्षियों ने उनके मांस से अपना पेट भर लिया... 20:4 फिर मैंने सिंहासन देखे, जहां वे बैठते थे, और उन पर न्याय करने का अधिकार दिया गया था। मैंने उन सभी की आत्माओं को देखा, जिसके सिर यीशु के लिए गवाही देने और परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के कारण काट दिए गए थे, और जिन्होंने उस जानवर या उसकी मूर्ति की पूजा करने से इनकार कर दिया था और अपने माथे या हाथों पर लगे उस निशान को स्वीकार नहीं किया था; वे जीवित हो उठे, और एक हजार साल तक मसीह के साथ राज्य किया। (प्रकाशितवाक्य 19:6,19-21; 20:4, एनजेबी)

ध्यान दें कि यीशु को अपने विरुद्ध एकजुट हुई संसार की सेनाओं को नष्ट करना होगा। तब वह और पुनरुत्थान के पहले संत राज्य करेंगे। तभी विश्वास में सच्ची एकता होगी। दुख की बात है कि बहुत से लोग झूठे सेवकों की बात सुनेंगे जो देखने में तो अच्छे लगते हैं, लेकिन वास्तव में अच्छे नहीं होते, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने चेतावनी दी थी (2 कुरिन्थियों 11:14-15)। यदि अधिक लोग बाइबल और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार को सही मायने में समझ लें, तो यीशु के लौटने पर कम लोग उनके विरुद्ध लड़ेंगे।

7. परमेश्वर का राज्य क्यों?

हालांकि मनुष्य यह सोचना पसंद करते हैं कि हम बहुत बुद्धिमान हैं, हमारी समझ की सीमाएँ हैं, फिर भी ईश्वर की "समझ अनंत है" (भजन संहिता 147:5)।

इसलिए इस ग्रह को ठीक करने के लिए ईश्वर के हस्तक्षेप की आवश्यकता होगी।

जबकि कई लोग मानते हैं मैं हे ईश्वर, अधिकांश मनुष्य उसकी बात मानने और उसके अनुसार जीवन जीने को तैयार नहीं हैं। वह सही मायने में निर्देशित करता है। निम्नलिखित पर ध्यान दें:

⁸ उसने तुम्हें, हे मनुष्य, यह दिखाया है कि क्या अच्छा है; और प्रभु तुमसे क्या चाहता है? सिवाय इसके कि तुम न्याय करो, दया करो और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलो। (मीका 6:8)

विनम्रता से चलना साथ ईश्वर वह चीज़ नहीं है जिसे मनुष्य वास्तव में करने को तैयार रहा है। आदम और हव्वा के समय से (उत्पत्ति 3:1-6), मनुष्य ने ईश्वर की आज्ञाओं (निर्गमन 20:3-17) के बावजूद, ईश्वर की प्राथमिकता से ऊपर स्वयं और अपनी प्राथमिकताओं पर निर्भर रहना चुना है।

नीतिवचन की पुस्तक सिखाती है:

⁵ अपने पूरे मन से प्रभु पर भरोसा रखो, और अपनी समझ पर भरोसा मत करो; ⁶ अपने सभी कार्यों में उसे स्वीकार करो, और वह तुम्हारे मार्ग का मार्गदर्शन करेगा। ⁷ अपने आप को बुद्धिमान न समझो; यहोवा का भय मानने और बुराई से दूर रहो। (नीतिवचन 3:5-7)

फिर भी, अधिकांश लोग सच्चे मन से परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते या उनके मार्गदर्शन की प्रतीक्षा नहीं करते। कई लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करेंगे, लेकिन करते नहीं। मनुष्य शैतान के बहकावे में आ गया है

(प्रकाशितवाक्य 12:9) और संसार की वासनाओं और 'जीवन के अभिमान' (1 यूहन्ना 2:16) के जाल में फंस गया है।

इसलिए, बहुत से लोगों ने अपनी धार्मिक परंपराएं और धर्मनिरपेक्ष सरकारें बना ली हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि वे सबसे बेहतर जानते हैं। हालाँकि, वे वास्तव में पश्चाताप नहीं करते (देखें यिर्मयाह 10:23) और न ही उनमें से अधिकांश पश्चाताप करेंगे।

इसीलिए मानवता को परमेश्वर के राज्य की आवश्यकता है (देखें मती 24:21-22)।

धन्य वचनों पर विचार करें

यीशु द्वारा दिए गए सबसे प्रसिद्ध कथनों में से एक धन्य वचन थे, जो उन्होंने जैतून पर्वत पर दिए गए पर्वतीय उपदेश में दिया।

उन्होंने जो कुछ कहा, उस पर ध्यान दें:

³ “धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।” ⁴ धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि उन्हें सांत्वना मिलेगी। ⁵ धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के वारिस होंगे। ⁶ धन्य हैं वे जो धर्म के लिए भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त होंगे। ⁷ दयालु लोग धन्य हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। ⁸ धन्य हैं वे जो हृदय से शुद्ध हैं, क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे। ⁹ धन्य हैं वे जो शांति स्थापित करते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। ¹⁰ धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। (मती 5:3-10)

परमेश्वर के राज्य में (मरकुस 4:30-31 देखें), जिसे मती अक्सर स्वर्ग का राज्य कहता है (मती 13:31 देखें), ये आशीष भरी प्रतिज्ञाएँ पूरी होंगी। परमेश्वर के राज्य में ही नम्र लोगों को पृथ्वी का उत्तराधिकार और पवित्र लोगों को परमेश्वर के दर्शन का वचन पूरा होगा। परमेश्वर के राज्य में मिलने वाली आशीषों के सुसमाचार की प्रतीक्षा करें!

ईश्वर के मार्ग सही हैं

सच्चाई यह है कि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8,16) और परमेश्वर स्वार्थी नहीं है। परमेश्वर के नियम परमेश्वर के प्रति प्रेम और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम दर्शाते हैं (मरकुस 12:29-31; याकूब 2:8-11)। संसार के मार्ग स्वार्थी हैं और मृत्यु की ओर ले जाते हैं (रोमियों 8:6)।

ध्यान दें कि बाइबल दर्शाती है कि सच्चे ईसाई आज्ञाओं का पालन करते हैं:

¹ जो कोई भी यह विश्वास करता है कि यीशु मसीह है, वह परमेश्वर से जन्मा है, और जो कोई भी उसे प्रेम करता है जिसने उसे जन्म दिया है, वह उससे भी प्रेम करता है जो उससे जन्मा है। इससे हमें पता चलता है कि हम परमेश्वर के बच्चों से प्रेम करते हैं, जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। ³ क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यही है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें। और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं। (1 यूहन्ना 5:1-3)

परमेश्वर की सभी आज्ञाएँ धार्मिकता पर आधारित हैं (भजन संहिता 119:172)। उनके मार्ग पवित्र हैं (1 तीतुस 1:15)। दुख की बात है कि बहुत से लोगों ने अधर्म के विभिन्न रूपों को अपना लिया है और वे यह नहीं समझते कि यीशु व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं को नष्ट करने नहीं, बल्कि उन्हें पूरा करने आए थे (मती 5:17), उनके वास्तविक अर्थ को समझाकर और उन्हें उस अर्थ से आगे बढ़ाकर जो बहुतों ने सोचा था (जैसे मती 5:21-28)। यीशु ने सिखाया कि “जो कोई इन आज्ञाओं का पालन करता है और दूसरों को भी सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा” (मती 5:19) (‘परमेश्वर का राज्य’ और ‘स्वर्ग का राज्य’ शब्द परस्पर एक ही अर्थ में प्रयोग किए जा सकते हैं)।

बाइबल सिखाती है कि कर्मों के बिना विश्वास व्यर्थ है (याकूब 2:17)। बहुत से लोग यीशु का अनुसरण करने का दावा करते हैं, लेकिन वे वास्तव में उनकी शिक्षाओं पर

विश्वास नहीं करते (मती 7:21-23) और उनका अनुकरण उस प्रकार नहीं करते जैसा उन्हें करना चाहिए (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 11:1)। “पाप व्यवस्था का उल्लंघन है” (1 यूहन्ना 3:4, केजेवी) और सभी ने पाप किया है (रोमियों 3:23)। यद्यपि, बाइबल दर्शाती है कि दया न्याय पर विजय प्राप्त करेगी (याकूब 2:13) क्योंकि परमेश्वर की वास्तव में सभी के लिए एक योजना है (तुलना करें लूका 3:6)।

ईश्वर के तरीकों के अलावा, मानवीय समाधान कारगर नहीं होंगे। सहस्राब्दि राज्य में, यीशु “लोहे के दंड” (प्रकाशितवाक्य 19:15) से शासन करेंगे, और जब लोग ईश्वर के मार्ग पर चलेंगे तो अच्छाई की जीत होगी। **दुनिया की सारी समस्याएं इसलिए मौजूद हैं क्योंकि इस दुनिया के समाज ईश्वर और उसके नियमों का पालन करने से इनकार करते हैं।** इतिहास गवाह है कि मानवता समाज की समस्याओं को हल करने में सक्षम नहीं है।

⁶ क्योंकि सांसारिक सोच मृत्यु की ओर ले जाती है, परन्तु आध्यात्मिक सोच जीवन और शांति की ओर ले जाती है। ⁷ क्योंकि सांसारिक मन परमेश्वर का शत्रु है; क्योंकि यह परमेश्वर के नियम के अधीन नहीं है, और न ही हो सकता है। ⁸ अतः, जो शारीरिक इच्छाओं के वश में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। (रोमियों 8:6-8)

ईसाइयों को आध्यात्मिक बातों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, और पश्चाताप और बपतिस्मा के बाद, हमारी व्यक्तिगत कमजोरियों के बावजूद, इस युग में ऐसा करने के लिए हमें परमेश्वर की आत्मा प्रदान की जाती है (रोमियों 8:9)।

²⁶ हे भाइयों, तुम अपनी बुलाहट को देखो, कि बहुत से बुद्धिमान, बहुत से बलवान और बहुत से कुलीन लोग नहीं बुलाए गए हैं। ²⁷ लेकिन परमेश्वर ने संसार की मूर्ख वस्तुओं को चुना है ताकि बुद्धिमानों को लज्जित कर दे, और परमेश्वर ने संसार की कमजोर वस्तुओं को चुना है ताकि शक्तिशाली वस्तुओं को लज्जित कर दे; ²⁸ और संसार की नीच वस्तुओं और तुच्छ समझी जाने वाली वस्तुओं को परमेश्वर ने चुना है, और उन वस्तुओं को भी

जो अस्तित्व में नहीं हैं, ताकि जो वस्तुएं अस्तित्व में हैं उन्हें नष्ट कर दे।
29 ताकि कोई भी मनुष्य उसकी उपस्थिति में घमंड न करे। 30 लेकिन तुम
मसीह यीशु में उसी के हो, जो हमारे लिए परमेश्वर की ओर से ज्ञान,
धार्मिकता, पवित्रता और उद्धार बन गया। 31 जैसा कि लिखा है, “जो घमंड
करता है, वह प्रभु में घमंड करे।” (1 कुरिन्थियों 1:26-31)

मसीहियों को परमेश्वर की योजना में गौरव प्राप्त करना चाहिए! हम अब विश्वास
से चलते हैं (2 कुरिन्थियों 5:7), ऊपर की ओर देखते हुए (कुलुस्सियों 3:2) और
विश्वास में रहते हुए (इब्रानियों 11:6)। परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के
कारण हमें आशीष मिलेगी (प्रकाशितवाक्य 22:14)।

परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार ही क्यों?

प्रोटेस्टेंट मानते हैं कि यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के बाद, वे
परमेश्वर के राज्य की खोज कर लेते हैं। रोमन कैथोलिक मानते हैं कि बपतिस्मा
प्राप्त करने वाले, यहाँ तक कि शिशु अवस्था में भी, उनके चर्च में प्रवेश कर चुके होते
हैं, जो परमेश्वर का राज्य है। रोमन और पूर्वी ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक मानते हैं कि
संस्कारों आदि के माध्यम से वे परमेश्वर के राज्य की खोज कर रहे हैं। यद्यपि
ईसाइयों के लिए बपतिस्मा लेना अनिवार्य है, ग्रीको-रोमन-प्रोटेस्टेंट मानवता की
समस्याओं के समाधान के लिए संसार की ओर देखते हैं। उनका ध्यान सांसारिक
चीजों पर केंद्रित होता है (रोमियों 8:6-8 देखें)।

परमेश्वर के राज्य को सर्वप्रथम खोजना (मती 6:33) मसीहियों का जीवन भर का
लक्ष्य होना चाहिए। यह लक्ष्य संसार से समाधान खोजने के बजाय परमेश्वर और
उसके मार्ग की ओर देखने का होना चाहिए। परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार हमारे
जीवन को बदल देता है।

बाइबल कहती है कि ईसाई यीशु के साथ शासन करेंगे, लेकिन क्या आप समझते हैं कि इसका मतलब यह है कि असल ईसाई वास्तव में शहरों पर शासन करेंगे? यीशु ने सिखाया:

¹² “एक कुलीन व्यक्ति अपने लिए एक राज्य प्राप्त करने और वापस लौटने के लिए एक दूर देश में गया।” ¹³ इसलिए उसने अपने दस सेवकों को बुलाया, उन्हें दस मीना सौंपे और उनसे कहा, 'मेरे आने तक व्यापार करो।' ¹⁴ लेकिन उसके नागरिक उससे नफरत करते थे और उसके पीछे एक प्रतिनिधिमंडल भेजकर कहने लगे, 'हम इस आदमी को अपने ऊपर शासन करने नहीं देंगे।'

¹⁵ और जब वह लौटा, तो उसने प्राप्त कर लिया...

राज्य में प्रवेश करने के बाद, उसने उन सेवकों को, जिन्हें उसने धन दिया था, अपने पास बुलाने का आदेश दिया, ताकि वह जान सके कि प्रत्येक व्यक्ति ने व्यापार से कितना लाभ कमाया है। ¹⁶ फिर पहला व्यक्ति आया और बोला, 'मालिक, आपके एक मीना ने दस मीना कमा लिए हैं।' ¹⁷ और उसने उससे कहा, 'शाबाश, अच्छे सेवक; क्योंकि तूने थोड़ी सी चीज में वफादारी दिखाई, इसलिए अब तुझे दस नगरों पर अधिकार दिया जाएगा।'

¹⁸ और दूसरा आया और बोला, 'मालिक, आपके एक मीना ने पाँच मीना कमा लिए हैं।' ¹⁹ इसी प्रकार उसने उससे कहा, 'तुम भी पाँच नगरों के स्वामी बनो।' (लूका 19:12-19)

आपके पास जो थोड़ा बहुत है, उसमें विश्वासयोग्य बने रहें। मसीहियों को एक सच्चे राज्य में, सच्चे शहरों पर शासन करने का अवसर मिलेगा। यीशु ने यह भी कहा, “मेरा प्रतिफल मेरे साथ है, ताकि मैं हर एक को उसके काम के अनुसार दूँ” (प्रकाशितवाक्य 22:12)। परमेश्वर के पास उन लोगों के लिए एक योजना (अय्यूब 14:15) और एक स्थान (यूहन्ना 14:2) है जो वास्तव में उसकी आज्ञा का पालन करेंगे (यूहन्ना 6:44; प्रकाशितवाक्य 17:14)। परमेश्वर का राज्य वास्तविक है और आप उसका हिस्सा बन सकते हैं!

2016 की शुरुआत में, पत्रिका विज्ञान “भीड़ की शक्ति” शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ था जिसमें यह बताया गया था कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और क्राउडसोर्सिंग मानवता के सामने मौजूद “जटिल समस्याओं” का समाधान कर सकते हैं। हालांकि, लेख यह समझने में विफल रहा कि समस्या क्या है, और इसे हल करने का तरीका तो दूर की बात है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्यक्रमों के बाद भी दुनिया की समस्याएं हल नहीं हुई हैं।

ईश्वर के सही मार्गों का पालन करने के अलावा, सहयोग 21वीं सदी में उसी तरह विफल होने के लिए अभिशप्त है जैसे वह महान बाढ़ के बाद था, जब मानवता ने असफल बाबुल के मीनार को बनाने के लिए सहयोग किया (उत्पत्ति 11:1-9)।

दुनिया में, मध्य पूर्व जैसे स्थानों में समस्याएं (अपेक्षित अस्थायी लाभों के बावजूद, उदाहरण के लिए डेनियल 9:27 a; 1 थिस्सलुनीकियों 5:3), मनुष्यों द्वारा हल नहीं की जाएगी - हमें परमेश्वर के राज्य की शांति की आवश्यकता है (रोमियों 14:17)।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या, अपेक्षित लाभों के बावजूद, संयुक्त राष्ट्र में धोखे में पड़े लोगों द्वारा हल नहीं की जाएँगी (देखें यहजेकेल 21:12) (देखें प्रकाशितवाक्य 12:9)—हमें परमेश्वर के राज्य के आनंद और सांत्वना की आवश्यकता है।

पर्यावरण की समस्याओं का समाधान अंतरराष्ट्रीय सहयोग से नहीं होगा, क्योंकि दुनिया के राष्ट्र पृथ्वी को नष्ट करने में मदद करेंगे (प्रकाशितवाक्य 11:18), बल्कि इनका समाधान परमेश्वर के राज्य द्वारा होगा।

यौन अनैतिकता, गर्भपात और मानव शरीर के अंगों की बिक्री जैसे मुद्दों का समाधान अमेरिका द्वारा नहीं (देखें प्रकाशितवाक्य 18:13), बल्कि परमेश्वर के राज्य द्वारा किया जाएगा।

अमेरिका, ब्रिटेन और कई अन्य देशों पर जो भारी कर्ज है, उसका समाधान अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता के माध्यम से नहीं होगा, बल्कि अंततः (हबक्कूक 2:6-8 के अनुसार विनाश के बाद) परमेश्वर के राज्य द्वारा होगा।

अज्ञानता और गलत शिक्षा का समाधान संयुक्त राष्ट्र से नहीं होगा—हमें परमेश्वर के राज्य की आवश्यकता है। धार्मिक कलह का समाधान किसी भी ऐसे अंतरधार्मिक आंदोलन से नहीं होगा जो बाइबल के सच्चे यीशु के बिना उद्धार को स्वीकार करता हो। पाप ही संसार की मूल समस्या है और इसके लिए हमें यीशु के बलिदान और परमेश्वर के राज्य में उनके आगमन की आवश्यकता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के पास मानव स्वास्थ्य के सभी उत्तर नहीं हैं—हमें परमेश्वर के राज्य की आवश्यकता है।

भूख की समस्या का समाधान आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों से नहीं होगा, जो संभावित बड़े पैमाने पर फसल खराब होने के कारण दुनिया के कुछ हिस्सों को अकाल के खतरे में डाल रहे हैं - हमें ईश्वर के राज्य की आवश्यकता है।

अफ्रीका, एशिया और अन्य जगहों पर व्याप्त भीषण गरीबी, भले ही कुछ समय के लिए अंत समय के 'बाबुल' (देखें प्रकाशितवाक्य 18:1-19) से लाभान्वित हो रही हो, गरीबी की समस्या का समाधान नहीं करेगी—हमें परमेश्वर के राज्य की



Albanian Claude
review notes.docx

आवश्यकता है। यह विचार कि यीशु के बिना, मानवता इस 'वर्तमान दुष्ट युग' में स्वर्ग का राज्य स्थापित कर सकती है, एक झूठा सुसमाचार है (गलतियों 1:3-10)। हमें परमेश्वर के राज्य की आवश्यकता है।

परमेश्वर के राज्य का सहस्राब्दी चरण एक वास्तविक राज्य है जो पृथ्वी पर स्थापित होगा। यह परमेश्वर के प्रेममय नियमों और एक प्रेममय परमेश्वर के नेतृत्व पर आधारित होगा। संत एक हजार वर्षों तक मसीह के साथ राज्य करेंगे (प्रकाशितवाक्य 5:10; 20:4-6)। इस राज्य में वे लोग शामिल होंगे जो वास्तव में परमेश्वर की

कलीसिया में हैं, लेकिन कोई भी शास्त्र यह नहीं कहता कि परमेश्वर का राज्य वास्तव में कलीसिया (रोमन कैथोलिक या अन्य) है। रोम की कलीसिया ने सहस्राब्दी शिक्षा का विरोध किया है, और बाद में जैसे-जैसे हम अंत के करीब पहुँचेंगे, यह बाइबल के सुसमाचार संदेश का और भी अधिक ज़ोरदार विरोध करेगी। संभवतः इसे मीडिया में व्यापक कवरेज मिलेगा जो मती 24:14 को पूरा करने में सहायक हो सकता है।

अपने अंतिम चरण में, परमेश्वर का राज्य “नया यरूशलेम, जो परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे आएगा” (प्रकाशितवाक्य 21:2) को समाहित करेगा और इसकी वृद्धि कभी समाप्त नहीं होगी। न तो कोई अधर्म होगा, न कोई शोक होगा और न ही कोई मृत्यु होगी।

परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार और उसे समझना बाइबल का एक महत्वपूर्ण विषय है। पुराने नियम के लेखकों ने इसके बारे में सिखाया। यीशु, पौलुस और यूहन्ना ने इसके बारे में सिखाया। नए नियम के बाहर बचे सबसे पुराने ‘ईसाई’ उपदेश में भी इसके बारे में बताया गया है। दूसरी शताब्दी के शुरुआती ईसाई नेताओं, जैसे पॉलीकार्प और मेलिटो ने भी इसके बारे में सिखाया। हम भी इस समय बाइबल में इसके बारे में बात करते हैं। हम कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड में आज इसके बारे में शिक्षा देते हैं। याद रखें कि परमेश्वर का राज्य वह पहला विषय है जिसके बारे में बाइबल बताती है कि यीशु ने उपदेश दिया था (मरकुस 1:14-15)। पुनरुत्थान के बाद भी उन्होंने इसी विषय पर उपदेश दिया था (प्रेरितों के काम 1:3)—और मसीहियों को सबसे पहले इसी की खोज करनी चाहिए (मती 6:33)।

सुसमाचार केवल यीशु के जीवन और मृत्यु के बारे में नहीं है। यीशु और उनके अनुयायियों द्वारा सिखाए गए सुसमाचार का मुख्य जोर परमेश्वर के आने वाले राज्य पर था। राज्य के सुसमाचार में मसीह के द्वारा उद्धार तो शामिल है ही, साथ ही इसमें मानवीय सरकारों के अंत की शिक्षा भी शामिल है (प्रकाशितवाक्य 11:15)।

याद रखिए, यीशु ने सिखाया था कि अंत तब तक नहीं आएगा जब तक कि राज्य का सुसमाचार समस्त राष्ट्रों के लिए गवाही के रूप में संसार में प्रचारित न हो जाए (मती

24:14)। और वह प्रचार अब हो रहा है। क्या आप उस अंतिम, अंत समय के कार्य में सहयोग देना चाहेंगे?

अच्छी खबर यह है कि **परमेश्वर का राज्य ही मानवता के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान है।** फिर भी, अधिकांश लोग इसका समर्थन नहीं करना चाहते, न ही इसे सुनना चाहते हैं, और न ही इसकी सच्चाई पर विश्वास करना चाहते हैं। परमेश्वर का राज्य शाश्वत है (मती 6:13), जबकि “यह संसार नश्वर है” (1 कुरिन्थियों 7:31)।

परमेश्वर के राज्य के सच्चे सुसमाचार का प्रचार करना हमारा कर्तव्य है। कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड इस विषय को लेकर गंभीर है। हम बाइबल में बताई गई सभी बातों को सिखाने का प्रयास करते हैं (मती 28:19-20), जिसमें परमेश्वर का राज्य भी शामिल है (मती 24:14)। जब तक हम उस राज्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं, हमें परमेश्वर के मार्ग को सीखना और उसका अनुसरण करना चाहिए तथा उन लोगों को सांत्वना देनी चाहिए जो सत्य पर विश्वास करना चाहते हैं।

क्या आपको परमेश्वर के आने वाले राज्य के सुसमाचार के प्रचार का समर्थन नहीं करना चाहिए? क्या आप परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार पर विश्वास करेंगे?

कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड

अमेरिका का डाक पता कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड (Continuing Church of God) है 917 W. Grand Avenue, Unit 109, Grover Beach, California, 93433 USA वेबसाइट www.ccoq.org.

कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड (Continuing Church of God - CCOG) वेबसाइटें

CCOG.ASIA यह साइट एशिया पर केंद्रित है।

CCOG.IN यह साइट भारतीय मूल के लोगों के लिए लक्षित है।

CCOG.EU यह साइट यूरोप को लक्षित करके बनाई गई है।

CCOG.NZ यह साइट न्यूजीलैंड और ब्रिटिश मूल के अन्य लोगों को लक्षित करती है।

CCOG.ORG यह मुख्य वेबसाइट है कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड

यह सभी महाद्वीपों के लोगों की सेवा करता है। इसमें लेख, लिंक और वीडियो शामिल हैं।

CCOGCANADA.CA यह साइट कनाडा में रहने वालों के लिए लक्षित है।

CCOGAfrica.ORG यह साइट अफ्रीका में रहने वालों के लिए लक्षित है।

CDLIDD.ES La Continuación de la Iglesia de Dios. यह स्पैनिश भाषा की वेबसाइट है। कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड.

PNIND.PH Patuloy na Iglesia ng Diyos. यह फिलीपींस की वेबसाइट है कंटिन्यूइंग चर्च ऑफ गॉड इसमें अंग्रेजी और टैगालॉग भाषा में जानकारी उपलब्ध है।

समाचार और इतिहास वेबसाइटें

COGWRITER.COM यह वेबसाइट प्रचार-प्रसार का एक प्रमुख साधन है और इसमें समाचार, सिद्धांत, ऐतिहासिक लेख, वीडियो और भविष्यवाणियों से संबंधित अपडेट शामिल हैं।

CHURCHHISTORYBOOK.COM यह एक आसानी से याद रखने योग्य वेबसाइट है जिसमें चर्च के इतिहास पर लेख और जानकारी उपलब्ध है।

BIBLENEWSPROPHECY.NET यह अंग्रेजी भाषा में एक ऑनलाइन रेडियो वेबसाइट है जो समाचार और बाइबिल संबंधी विषयों को कवर करती है। BNPI.NET इसमें कई भाषाएँ हैं।

प्रवचनों और लघु प्रवचनों के लिए YouTube और BitChute वीडियो चैनल

BibleNewsProphecy चैनल। सीसीओजी के छोटे प्रवचनों के वीडियो।

CCOGAfrica चैनल। अफ्रीकी भाषाओं में सीसीओजी संदेश।

CCOG Animations यह चैनल ईसाई धर्म की मान्यताओं के विभिन्न पहलुओं को सिखाता है।

CDLIDDsermones इस चैनल पर स्पैनिश भाषा में संदेश उपलब्ध हैं।

ContinuingCOG चैनल। सीसीओजी वीडियो प्रवचन।

नीचे दी गई तस्वीर में यरूशलेम में स्थित एक इमारत की कुछ बची हुई ईंटें (साथ ही बाद में जोड़ी गई कुछ ईंटें) दिखाई गई हैं, जिसे कभी-कभी Cenacle के नाम से जाना जाता है, लेकिन इसे यरूशलेम की पश्चिमी पहाड़ी (जिसे वर्तमान में माउंट सिओन कहा जाता है) पर स्थित ईश्वर के चर्च के रूप में बेहतर ढंग से वर्णित किया जा सकता है:



माना जाता है कि यह संभवतः सबसे पहले वास्तविक ईसाई चर्च का स्थान था। एक ऐसा भवन जहां यीशु के 'परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार' का प्रचार किया गया होगा। यह यरूशलेम में स्थित एक ऐसा भवन था जहाँ परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया जाता था।

इसलिए हम निरंतर परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, क्योंकि हे भाइयों, तुम यहूदिया में मसीह यीशु में परमेश्वर की कलीसियाओं के अनुयायी बन गए। (1 थिस्सलुनीकियों 2:13-14)

उस विश्वास के लिए पूरी लगन से संघर्ष करो जो एक बार सभी संतों को सौंपा गया था। (यहूदा 3)

उसने (यीशु ने) उनसे कहा, “मुझे परमेश्वर के राज्य का प्रचार दूसरे नगरों में भी करना है, क्योंकि मुझे इसी उद्देश्य से भेजा गया है।” (लूका 4:43)

परन्तु परमेश्वर के राज्य की खोज करो, और ये सब वस्तुएँ तुम्हें दी जाएँगी। हे छोटी मंडली, डरो मत, क्योंकि तुम्हारे पिता की यही इच्छा है कि वह तुम्हें राज्य दे। (लूका 12:31-32)

और राज्य का यह सुसमाचार सारी दुनिया में सब जातियों के लिए गवाही के रूप में प्रचारित किया जाएगा, और तब अंत आ जाएगा। (मत्ती 24:14)